کرشن لیلا



۱۔ ٹائیٹل — کرشن لیلا

۲۔ صفحہ — ۱۹۲

۳۔ عکس — جنوری ۱۹۸۲ء

۴۔ کاتب — مصنّف

۵۔ آرٹ تہ حاشیہ — (")

۷۔ موٗل (شیٹھ روپیہ) Rs. 60/-

۸۔ چھاپہ خانہ :-

कृष्ण-लीला

پرنٹرز اینڈ پبلشرز :-

فاضل کاشمیری

ساکنہ گُلشن نگر۔ چھانپورہ۔ سرینگر

کشمیر ۱۹۰۰۱۵

مختصر شریمد بھگوت گیتا دنیا کی قدیم روحانی کتابوں میں بے حد اہمیت رکھتی ہے۔ اس کا

سورگیہ شریمتی مایاونتی بترا
کی سمرتی میں سمرپت۔
(مصنّف)

स्वर्गीया
श्रीमती मायावंती बतरा
की
पुण्य स्मृति में
समर्पित

फाज़िल कश्मीरी



بنوُوم پان ہوٗرلی سوزٕ لوٚرمَس
میٖژلوٲ اوُسس تہٕ اَنگ اَنگ سازٕ کوٚرمَس
وۄزُس یٖس نٲش چھیلتھ ژھٔنِمَس کدٗورَت
تُلتھ زٔنگارِ نٔوُرک آیہ پوٚرمَس

———-———

شریمد گیتا جی کِس قسم کے فوق البشر انسان (سپرمین Superman) پیدا کرنا چاہتی ہے

۵۶ جو سکھ سے سکھی ہو نہ دکھ سے دکھی ۔ نہ خوف اُس کو آئے نہ غصّہ کبھی ۔ نہ جذبوں کے



नूरुक आयि

वनोवुम पान मोरली सोज़ वोरमस
मेच्युव ओसुस त अंग अग साज कोरमस
वोजुस यस निश छलिथ छ्'न्यमस कदूरथ
तुलिथ जंगार' नूरुक आयि पोरमस

नोट : नूरुक आयि :— (सूरऐ नूरक आयि, सूरऐ नूर छु कुरानिमजीदुक अख सूरऐ शरीफ)
त ...

स्वमक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

حرفِ اوّل

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سِلسلہ میں یہ کتاب کرشن لیلا میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شاملِ حال رہی، جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اِس کتاب کی تزئین (Decoration) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرّت حاصل رہا ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسر چمن لال جی سپرو اور پنڈت سائیل کاشمیری صاحب نے تعاون دیا، اور گنیش مندر پربندھک سمتی سرینگر اور سناتن دھرم پرتاپ سبھا سرینگر نے مالی امداد دی۔ مَیں نے رسالہ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے کافی فایدہ اُٹھایا ہیں ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے اُن کی چند خامیوں

* दो शब्द *

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब " कृष्ण लीला " मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-शान तामीर करने में मुझे ईश्वर - अल्लाह की हमागीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Decoration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है ।

जेर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण–भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा॰ जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू साहित्र और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल "साइल–कश्मीरी" और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें "कल्याण" गोरखपुर का नायाब खसूसी "भागतङ्क", और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं ।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा

کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی ۔ میں نے بنیادی

طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا ہے اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اولیٰ

سال اسلامیہ سکولوں میں گزارے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی

کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی

کا نقشہ اُتارا ہے ۔ اس لئے میری کرشن لیلاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر

کی جھلکیاں اُبھرتی ہیں ۔ یہ کہنا بے جا نہ ہوگا کہ رگھوپتی سہائے

فراق گورکھپوری کے کلام میں جا بجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو بہ پہلو

ہندی بھاشا کی کرنیں جھلملاتی ہیں جو ایک فطری امر کا آئینہ دار ہے ۔

دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت

میں شامل ہے ۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ

نہیں رہ سکتا ۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری کرشن لیلا پڑھ کر یا سن کر

یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لیلا کار فاضل کی شاعری اور خیالات و بیانات کا

करने में कोई झिझक महसूस नहीं होती — मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबियत के दस अवायली साल इस्लामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अ`बी के माहिरीन असातिजा उलमाए वक्त से जबान-व-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जवाइर की झलकियां उभरती हैं। यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख-पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीब के पहलू-व-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है। दूसरी बात इस हकीकत को निशानदिही है कि "नात" कहना मेरी सिरिश्त में शामिल है — इस लिए रंग और कैफ--व-गुदाज से भी अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी "कृष्ण-लीला" पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीला-कार फाजिल की शायरी और खयालात और बया-नात का Convas बहुत वसीह है या वह तख-

کنواس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیل کے ایک حلقہ سے نکل کر دوسرے
حلقہ میں پڑنے میں کچھ تامل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشقِ رسول
ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گور بھگت بھی ہے۔
کیونکہ فاضل نے ستگورو سری بابا گورونانک دیو جی پر بھی اپنی
کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مسلمان ہونے کے
ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟....
کچھ بھی نہیں... ہاں! اتنا کہونگا کہ لوگ مجھے "شاعر" کہتے ہیں

یہاں چند عامیوں[1] کے سوال کا جواب دینے میں
مجھے تامل[2] نہیں کہ میں نے اپنی عمر کے گرانقدر اور
مصروف ترین ۲۰ وسال کرشن لیلا" تصنیف اور
مرتب کرنے میں اِس لیئے صرف کیئے کہ سری گیتا جی کے
مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدس[3] سلوک کا

نوٹ:-
۱۔عامی:- ناخواندہ ۲۔تامل = اندیشہ ۳۔مقدس = پاک

ययुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमुल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण - भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाज़िल ने सतगुर सिरी बाबा गुरु नानक देव जी पर भी अपनी कई तखल्लुकात भेंट चढाई हैं या यद कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा ? .... कुछ भी नहीं......... हां। इतना कहूंगा कि लोग मुझे "शायिर" कहते हैं—

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमुल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-व-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ कियें कि श्री गीता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

مَیں قایل ہوں سے

ترجمہ:-

your right is
to work only, but
never to the fruit
thereof. Let not
the fruit of action
be your object,
nor let your
attachment be
to inaction.



تجھے کام کرنا ہے او مردِ کار
نہیں اُس کے پھل پر تجھے اِختیار
کیے جا عمل اور نہ ڈھونڈ اس کا پھل
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آشا ہے کہ وسیع النظری سے
نوازے گئے قارئین اور سامعین میری "کرشن لیلاً" سے کافی حد تک متاثر ہونگے جس سے
اُن کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات اُبھر آئیں گے۔

فاضل کاشمیری

گلشن نگر سرینگر 15
1-1-1984

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार
नहीं उसके फल पर तुझे इख्तियार ।
किये जा अमल और न ढूंढ–इसका फल
अमल कर, अमल कर, न हो बे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी मे नवाजे गए कायरीन् और सामियीन मेरी "कृष्ण-लीला" से काफी हद तक मुतासिर होंगे — ज़िससे उनके दिलों में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगें ॥

फाजिल कश्मीरी

गुलशन नगर
श्रीनगर–१९००१५
१-१-१९८४

कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लीला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद, नरोत्तमदास, रत्नाकर सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिखमत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाजिल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को झंकृत कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिमुखरित

किया गया है — कृष्ण की बांसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय—भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है। वही 'जय–जय हरि' कहने लगता है। उसका हृदय पाक-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता। फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन जल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मल को धो डालता है —

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,
छलान हेंद्यन मुसलमानन दिलुक मल।

फाजिल साहब कृष्ण की बांसुरी की मधुरता पर मोहित हैं। बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है। बांसुरी में फूंक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है। ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान की जासकती हैं। इसी बाँसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी तो एक ही समान हैं। कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है। उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की बदौलत है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है। जिन व्यक्तियों

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिंगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सौहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण-काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

(निजामउद्दीन)

DR. NIZAM-UD-DIN
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

१२-१-१९८४

contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter of the Lord do not become influenced by the material qualities.

TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

etad īśanam īśasya
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaiḥ
na yujyate sadātma-sthair
yathā buddhis tad-āśrayā



TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not affected by the qualities of material nature, even though He is in

ترتیب

صفحہ

۱۔ پروفیسر نظام الدین ۲۔ ڈاکٹر جگت موہنی ۳۔ علی محمد لنکر ۴۔ پروفیسر چمن لال سپرو
۵۔ شیو اچاریہ موتی لال شمن جو گیت لنگا ۶۔ لالہ نیلا رام بجیون کول کچہ باغ۔


رادھایہ بری پیالہ - ژ گوپالہ مہ کُن وچھ - اَز کالہ یِزِم سالہ دماہ - لالہ مہ کُن وچھ
राधायि बरी प्याल’ चे गूपाल’ मे कुन वुछ
अज काल यिज्यम साल’ वमाह लाल’ मे कुन वुछ
वृन्दावन कलानाथौ हृदयानन्द दायिनौ,
सुखदौ राधिका कृष्णौ भजेऽहं कुंजगामिनौ ।।



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa *means 'all-attractive.' What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"*

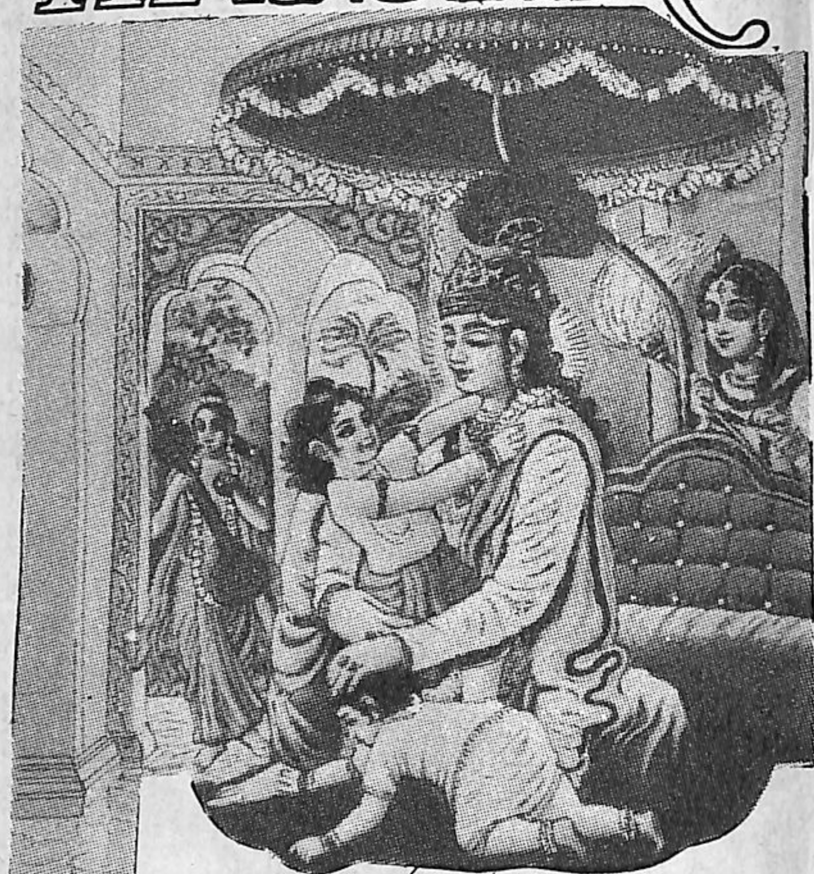
پِتا ماتا : کرشن ۔ ماتا پِتا سُے
گُورُو سُے گیان سُے تَے آتما سُے
دِلس شرُوپمُت ۔ اَچھن منز جاے تمی سنز
مُحبّت سُے خلوصِچ پنز دیا سُے

पिता माता कृष्ण - माता पिता सुय
गुरू सुय ज्ञान सुय तय आत्मा सुय
दिलस श्रोपमुत अंछन मंज़ जाय तंम्य संज़
महोबत सुय खुलूसुच पंज़ दया सुय॥



कृष्ण पंज़य पांठ्य मखलूकन पनुन मोल ।
करान छुस पोंपुरिन्य गथ, तस वरानलोल॥

KRISHNA



کرشن پنزِ پأٹھی مخلوقن پنن مول

کران چھس پوٗنیرِ گتھ تم برأن لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پرزلونی دست و پا چھم سریہ کرشنس
دلکی یم نقشہ ہاوم سریہ کرشنس
یمو کانیاہ حسین پمپوشہ سر کری
یمو ستی تخ سجاوم سریہ کرشنس

۱۔ دست = اتھ۔ ۲۔ پا = کھور ۳۔ تخ = تخت

प्रज़लवुन्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस
दिलुश्य इम नक्शि हांविम श्रीकृष्णस
यिमव 'कांरयाह् ह्सीन पंपोशि सर 'कंर्य
यिमव सूत्य तख सजांविम श्रीकृष्णस



His Divine Grace



श्रीकृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं

خوبصورت

خوٗبصوٗرَت سانہٕ آنٛگنیٚ ژٲو تےٚ
گوپِین دِیہِ تو کرٛشِن سون آو تےٚ

کرٛشنہٕ ڈیٛوٗٹھم ژھایہ روٗس زَن ماہتاب
شاہہ ژھاین ہرینہٕ ہیوٗ نوٗن دراو تےٚ

ہیوٗن دِل اوس دآرِ روٗس دروازٕ روٗس
اَتھۍ اندر یِرژھنے کوٗرُن ٹھہراو تےٚ

نوٗرِ ستۍ اوٗنٛد پوٗکھ گرُک کوٗرُنم نہال
مَن پرسَن چھُم ۔ دِل برٛان چھُم چاو تےٚ

ذِکرِ بیٚہِتھ تےٚ فِکرِ بیٚہِتھ کرٛنَم دِیا
مِیانہٕ غفلژ ہُند ہیوٗتُن ماناو تےٚ

کرٛشنہٕ دِیُتھَم تیوٗت رُڈی رُڈی سیر گوٗس
توتہٕ دوٗپھتم یُیتھنہٕ روزی گراوٕ تےٚ



सूब सूरत सानि ग्रांग्'न्य चाव तय।
गूपियन द'प्य तव कृष्ण सोन ग्राव तय॥

कृष्ण ह्यू ठुम छांयि रो'स जन माहताब,
श्यामु छायन सिरिय ज़न नो'न द्राव तय॥

म्योन दिल ग्रोस दारि रो'स दरवाज़' रो'स।
ग्रंध्य मन्दर प्रछ़नय को'रुन ठहराव तय॥

नूर सात्य ग्रो'न्द पो'क्ष गछ़क कोंरनम निहाल,
मन प्रसन्न छुम दिल बराम छुम चाव तय॥

ज़िकिरि प्यठ तय फ़िकिरि प्यठ कॅरनम दया।
म्यानि गफ़ल'च़ हुन्द ह्योतुन मा नाव तय॥

कृष्णु ह्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस,
तोति दोपथम "युथ न रोज्यम ग्राव तय"

یوٚر ژھورُم، اوٚر کرِشنَن گوٚرنُس
بَس کُنی کتھ : کرِشنہٕ گارُن پرٛاوٕتے
کرِشنہٕ سمرَت کرَتہٕ چشمو ڈیشہَن
یوٚد نہٕ باوَر چھُے ذَرا ازماو تے
بانسرِی کُن کَن تھٲوِتھ منزِل سوٚرُم
فاصلا اَسہِ نگُن ہیہٕ گو صحراو تے

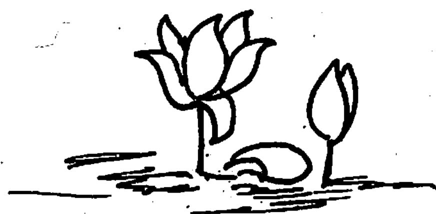
شہکار

ہیہٕ گو بیدار بخ . اَز گوم بیدار بخت
وُچھُم دیدو کرِشن تَس سرِیہ اَنہار
سہٕ گوٚزمُت ووٚدستہٕ کارُن پوٚز صنم ہیو
دِتُن زِگتس پنُن اَکھ حُسنِ شہکار

योरॅ छोरुम ओरॅ कृष्णन गोरनस।
बस कुनी कथ—कृष्णु गारुन प्राव तय॥

कृष्ण स्मरन करत' चश्मव ड्योंठिहन।
योद नु वावर छुँय ज़रा अज़माव तय॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मंज़िल सुरुम।
'फ़ाज़िला'! आंगुन ह्य गव संहराव तय॥





ह्य गव बेदार वुछ्त अज़ ओम बेदार।
वुछुम दीदव; वुछुम तस सिरियि मनहार,
खुदा सावन कृष्ण गोर सोंच कंथि कंथि।
दितुन जगतस पनुन अख हुसनि शाहकार॥



میرا یہ پیٹھ کرشنہ دَیا

پریمہٕ ہٕش میٖرا اسو گیانچ کنی ہتال
جلوٕ آوتھ بختہٕ بڈ کرتھن نہال
بالہ کرشنا! تس یہ پرژھنے دتھ ژٕ گوکھ
تِ دِتم چھےٚ پننہِ عظمژ ہُند سوال

ژٕ یامتھ کھوٗلتھم سٕتھ درشنکی بر
کھورن تل وچھ میہ صحرا، کوہ تہ سنگر
مکانکی تے زمانکی حلقہ ژھوٚٹ گام
چھُہنا کرشنہ گوپالا ژٕ یاور

चे यामत खूल्यथम सथ दर्शनकि बर।
खोरन तल वुछ म्य सहरा, कुह त संगर
मकानुक्यं तय ज़मानुक्य हलक छोट्य गाम
छुहम ना कृष्ण गोपाला! म्य यावर ॥



मीराय प्यठ कृष्णु दया

प्रेमु हुंच मीरा स्व ज्ञानुच कुन्य मिसाल,
जलवु' हाविथ यारकेंच कोरथन निहाल।
वालु कृष्णा तम यि पिलुनय दिथ चु' गाश
तो दितम म्य पननि अज़मच हुन्द सवाल॥



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانہٕ پریمُک زۄنگ یمِس لۄگ سۄر گو
سِریہِ مَن پرٛوُن زٕژُن ہُند نۄر گو
لَن ترانٕی پرانہِ سمیچ ریت آس
قوٚدرِ سٕتی میرایہٕ اَنگ انگ طۄر گو

चानि प्रेयमुक ज़ोंग येमिस - लोंग सूर गव,
सिर्ययि मन प्रोवुन ज़चन हुन्द नूर गव ।
लन तरानी प्रानि समयिच रीत ग्रांस ,
कोर्त्र सृत्य ' मीरायि ' ग्रंग ग्रंग तूर गव ॥



میٚون دِل اوس دارِ روٗس دَرواز روٗس
اُتھی اندر پرژھنے کوٗرُن ٹھہراو تَے

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़ु रो'स।
अंथ्य अन्दर प्रछनय को'रुन ठेहराव तय ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मास, दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन की आस॥

Love at first Sight

خاندر

شُبیہہ کرشنُن وُچھُم دھرتی بنیُل گو
اَچھن تہندِس شُبیہس ستی میُل گو
وجُودک ویُتر تھوُوم بَس آیتن تسی
کرشن پرُووم مبہ کیُت خاندر مُرشیل گو



(میرا)

۱۔ شبیہہ = فوٹو
۲۔ دھرتی = زمین
۳۔ ویُتر = جائداد
۴۔ مُرشیل = شگفتی
۵۔ آیتن = حاضر
۶۔ پرُون = حاصِل کرُن

शबीह कृष्णुन वुछुम धरती बन्युल गोव,
अछन तँहदिस शबीहस सुत्य म्युल गव ।
वजूदुक व्युच थोवुम बस आयितन तस्य,
कृष्ण प्रोवुम म्य क्यत खांदर संकुयुल गव॥

کاگا! سب تن کھائیو۔ چن چن کھائیو ماس۔ دو نیناں مت کھائیو۔ پیا ملن کی آس



شُرِ کرَن پۆزا پَزُیک اِظہار ئی
کرٛشنہٕ بھگتَن شُرِ منٛز تام کار ئی
زاہدا! یِتھِنۍ کرٛشن درشُن دِوان
دِل کرُن موٗصُم دِئی اُدھار ئی

शुर्य करन पूज़ा—पज़्युक इज़हार यी,
कृष्णु भक्तन शुलि मंज़ ताम कार यी।
ज़ाहिदा ! यिथिनुय कृष्ण दर्शुन दिवान,
दिल करुण मोसूम दियी ओधार यी ॥



یِمیٚس پُرشس زَنَم یِیوٚ وپھِروٕ ژٕ پانَس
رُٹن کٔنی کرشنہٕ وَتھ ووتا لامکانَس
چھُیے پراَلبٔ گٔنبر اَگروٕ سنز کَل
بنِ پمپوشہٕ سَر اَنگ اَنگ ژرٕ پانَس

ا انسان
۲ باگوان
۳ قیمت
۵ سَر چھیل

پَرَن گیتا تہٕ کرٛشنُن داس سَپَدکھ
سوُرَن گیتا تہٕ کرٛشنٕنۍ ماے پرٛاوکھ
کَرِ ہیُل کرٛشنہٕ لالس سیتہٕ سمرَن
سمرٕ گیتاؔ سمرٕ کرٛشناؔ مَہ کَڈ تھَکھ

पहन गीता त कृष्णुन दास सपदख
[illegible]हन गीता. त कृष्णन्य माय प्रावक
करी म्युल कृष्णलालस सूत्य स्मरण
स्मर "गीता" स्मर "कृष्णा" मकड थख



येंमिस पुरुषस ज़नुम प्यव फ़ूच़ पानस,
रंटुन कुन्य कृष्णु वथ वोत लामकानस।
छ्यय प्रालब्द गंनिर अक्रूर संज़ कल,
बंनिय पंपोशि सर अंग अंग चें पानस॥

नोट -
वल = गंड, मुशकिल





भक्त रसखानपर कृपा

رسہٕ خانَن گورناتھ کرٕتھس دیا[1]
لولہٕ والِنْ کرٕ دیا کینہہ کم چھیا
نابہٕ کارہ چھُس۔ مگر چوٗن داس چھس
کرتہٕ داسس پیٹھ تہٕ ازہ مہرژ لگا

[1] مہربانی

یَمِس پیٹھ کرٛشنہٕ مہراجن دیا کر
بہٕ آسانی تمِس ناو ساگرس ترٕ
حیاتی تِہنٛز پیٹھ جیوَن تہٕ حیران
سُہ وانٛسن زِندہٕ رُود پیٛاوُن عُمرٕ ژٕر

य!मिस प्यठ कृष्ण महाराजन दया 'कर
ब आसानी तमिस नाव सागरस 'तर
हयाती तिहिंजि प्यठ जीवन ति ह'रान
सु वांसन ज़िंद रूद प्यवन उमर चर



रसखानस टोठयव दया

रस खानन गोरनख क'रथस दया,
लोलु'वाल्यन किच दया कैंह कम छया ।
नावु'कारा छुस. मगर चोन दास छुस,
करतु दासस प्यठति अज़ म्यहरु च निगाह ।।



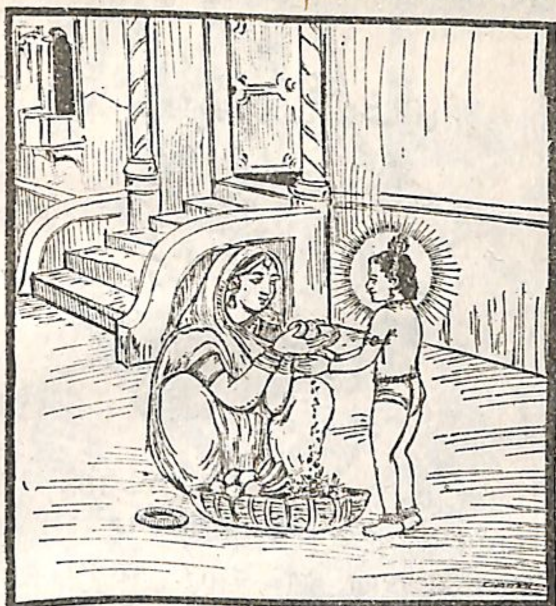
भक्त विल्वमंगलपर कृपा

● گُپالَن بلوٕمنگل کوٚر یہِ خوشحال
تمِس اوس کرشنٕہ سمرن حال تہٕ قال
اوَے کرِنوٗ نَس منزِل سواگت
چھُ کوتاہ رُت دیالو کرشنٕہ گوپال!

یِمو لُہرو وِ پزُرک قصرِ شاہی
تِمو کُر پانہٕ سے آخر تباہی
کرشن مہراج وۄتھ اُدھار کوٗرنکھ
چھُ کوتاہ جان بھگوَن یا اِلٰہی!

ग्रिमव लुहरोव पज़रुक कसरि शांही,
तिमव कंर: पानुसुय आंखुर तबांही।
कृष्ण महाराज वोंथ उधार कोंरनख,
छु कोताह जान भगवन या इलांही!

गोपालन बिल व मंगल कुरुय खुशहाल,
तंमिस ओस कृष्णु स्मरण हाल तय काल।
अवय करनांव्यनस मंज़िल स्वागत,
छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल !!



फलवालीपर कृपा

● میوٕ واجێنی بختہٕ بڈٕ اکھ نازنین
کرٛشنہٕ سمرن اوس تس پوٗزاتہٕ دین
پرٛتھ میوٕس منٛز دیٛنٹھ گو تس کرٛشنہٕ رنگ
ہووُن تس تمی موکھ پٔژن۔ کوتاہ حسین

چھ کرداُرک تھزر ولوٚد کرشنہٕ بھکتس
تمس گیانچ تپش پانس اندر مس
چھ اوگون تس نشے یژ دوٗر یژ دوٗر
تھوان بھگون پرش یتھ ستی پانس

छु किरदारक थज़र व्योंद कृष्णु भक्तस,
तमिस ज्ञानुच्य तपिश पानस अन्दर मस।
छि अवगुण तस निशे यच़ दूर यच़ दूर,
थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यन्य भक्त वड़ अख नाज़नीन,
कृष्णु स्मरण ओस तस पूजा तु दीन।
प्रथ मेवस मंज़ द्रांठ्य गव तस कृष्ण रंग,
होवनस तम्य मुख़ पनुन कोता हसीन ॥



سور داسس کرشنہ بخشتھ گیان دھیان

تشنہ ہردن گوسہ عرفان باگران ۲

کیاہ گژھی کم یوٗد مبہ تے ساگر کرکھ

لکھ مبہ منزی بیتھ اسہن تارس تران

کرکھ یودٕ کرٛشنہٕ سودا، کٕن پننٕ دِل
مگر سودا بنُن دوٗن منٛز چھُ مشکل
کرِی ما اوٚر بھگوٚن بخت بیدار
مُلے کر کرٛشنہ بھگتی، بَن ژٕ فاضِل

करख यॆंद क्रुष्णु सोदा 'कुन पनुन दिल,
मगर सोदा बनुन दुन मंज़ छु मुशकिल।
क्ररी मा ग्रोरु भगवन भक्त बेदार,
मुलय कर क्रुष्ण भक्ती बन च़ फ़ांज़िल॥

सूरदासस ग्रा'नुथ गाश

सूरदासस क्रुष्णु वनुनुय ज्ञान ध्यान,
तस्नु हृदयन गो मु ड्रफान बा'गरान।
क्याह गछी कम यॊद' ग्यते मागर करख।
लुब्ब म्य मंज़्य युथ पास'हन तारस तरान॥



کرشنہ اچونے نقشہ پاچھم شوز مَن
چھس اوے کنہ دین وٕچھِمح وتھ سوٕ دن
یِ کران لچھ منزلن ہنز وتھ گدِم
چھیکرس چھس پانہٕ از منزِل بنن

کیا خدا ہے؟ اس کا جواب گیتا دیتی ہے۔ خدا ہے۔ بلکہ خدا ہی ہے۔ دوسرے

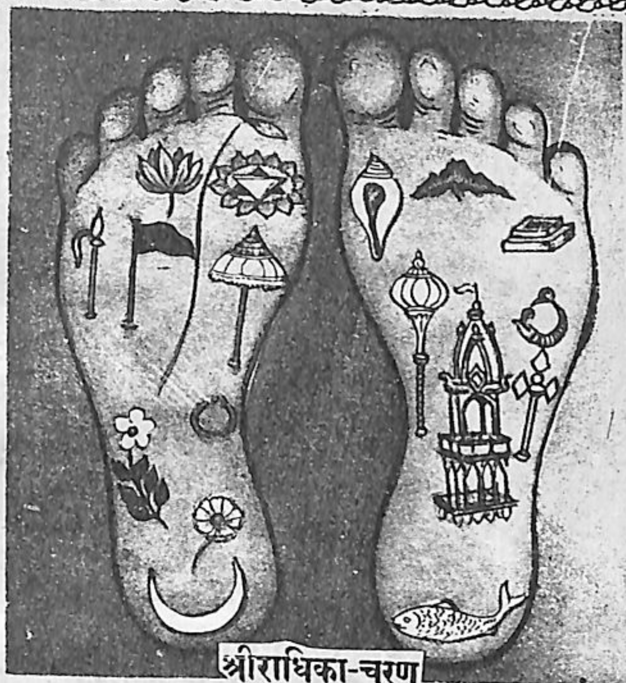
شری کرشننی چرن سادھن کلس پیٹھ
مگر یارس چھلان پننو اتھو کھور
یہ کرنس منز تمس حاصل پرسنتا
یہ گو پریمک خلوصک آخری حد

نوٹ: ۱- یار: سدا بہا جیس کن اشارہ ۲- پرسنتا: خوشی، مسرت۔

श्रीकृष्णन्यचरण सादन, कलस प्यठ,
मगर यारस छलान पनन्यव अथव खुर।
यि करनस मंज़ तमिस हासिल प्रसन्नता,
यि गव प्रेयमुक, खुलूसुक आखरी हद॥



कृष्ण! चोनुय नकश' पा छुम श्रूच मन,
छुस प्रवय किन्य दीन' धर्मुच वथ स्वरन।
यी करान लछ म'ज़िलन हुंज वथ क'डुम,
छेकरस छुस पानु अज़ मंज़िल बनन॥


श्रीराधिका-चरण

● رادھا چھ آمژ کرشنہ وتو ڈالہ اَنِن زان
پرتھ منزلس پیپھ زانہ ونِن باگہ دِتن گیان
محروم پھرشن بانہ دین دیت نہ بخش دِل
تِم گاشہ تَش یتھ دور پیمتی أَنی تہ پریشان

پمپوشہ پاد

۱

ڈالہِ شوٗبیا میون دِلؔ موٗرلی دٔرَس
یس یوٚہے پمپوش پھوٚل میانِس سَرَس
دِل چھُ دل : پمپوشہِ پادَن ہُنٛد عکس
ڈاٗلؠ گذرٲوِتھ کھوٗرَن میوٗٹھہٕ کرَس

पंपोशि पाद

डालि शूब्या म्योन दिल मुरलीदरस,
बस योहय पम्पोश फोल म्योनिस सरस ।
दिल छु दिल पम्पोशि पादन हुन्द अक्स,
डाल्य गुज़राविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि आमुच् कृष्ण वतव, डाल अंनिन ज़ान
प्रय मंज़िलस प्यठ ज़ानुवुन्य न बागि दितुन ज्ञान
महरूम पुरुषण बानु, दयन छुतु नु बखशुन दिल,
तिम गाशिनिश येंच् दूर प्यंमति अंन्य तु परेशान



گیٹشیمس باٸکس نش نرون شرَان
پُری چھا ! خور چھا ! اوتار انسان
اُچھن وُنرمَل ، ڈیکس ٹندرم موکھس گہ
پہ وُچھتے کامہ دیوس ہوش راوان

—— . ——

विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ।१७।

سِری کرشنا! مَنُک وُیُڑ باوَفا دِم
پِتا ماتا چھُہَم پرٔیچھ دَیا دِم
یَمَن ہیاہِن گُوݨن پھِر امرِتُک سَگ
امی سٔتی زَنمہ پھِیر کاسُم بَقا دِم

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बावफा दिम
पिता माता छुह्म प्रमच्य दया दिम
यमन ध्यान्यन गुणन फिर अमृतुक सग
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम वका दिम



ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान
परी छा ! हूर छा ! अवतार इन्सान ।
अछन वुजमल, ड्यकस चन्द्रम मुखस गाह
यि वुछयथ कामदोवस होश रावान ।।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः । अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ।१८।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ।१६। अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।

१६/२



● سمی تۆی گۆپیوٕ شالمارٕ ہے ترو

بالہٕ کرٕشنس کرو پوشہٕ پوٗزای

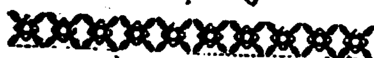
پوشہٕ پوٗزا کرتھ لولہٕ شبداہ پرو ۔ بالہٕ کرٕشنس کرو پوشہٕ پوٗزای

بالہٕ کرشنس کرو پوشہٕ پوٗزای

———

رُوپ میون اوس مَن ہیمی سِتی نار زَن
زمہریرکی پاٹھی شیہلوو سوچنن
تَن حرارت۔ مَن چھ گیانچ ژینوَنی
ژینہ وَنی گیانچ دِژم مولی دارن

रूप म्योन ओस मनहेमी स्त्य नार ज़न,
ज़महरीरुक्य पांठ्य शेंहलोव सोंचनन।
तन हरारत- मन छु ज्ञानुच चेनुवन,
चेनुवन ज्ञानुच दिचुम मोरलीधरन॥



(वनुवुन

सम्यतवी गूपियव शालुमार हय तरव,
बालकृष्णस करव पोशि पूजा ॥
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह् परव
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् । कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥
न जायते म्रियते वा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥

گوکلس ساری سے زتین زولہ کرو۔ جایہ جایہ ہے کرو ژندرمس سال
پریمہ سرہیہ بانسری لولہ تھالن برو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

الفیتھ مورتھہ ییتھ شریرس گرو۔ لولہ والین ڈیو ییتھ برن مامے
مایہ ہوت اکھ قدم تل ژروچھ مامرو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

مالہ لوگ پربتس، ییتھ بہن مازرو۔ سارنے دل تہ شل ازچھ لوشان
گیونہ لج آبہ جوی۔ ترنہ لگیم سرو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

حسنہ آکاشہ کنی لعل و گوہر جرو۔ تارکن فاضلا شولہ پراگاش
دیوین گوژھ ونن یانہ از تراورو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

۲۲۔ بدلتا ہے انسان لباس کہن تیتھ نیا جامہ کرتا ہے پھر زیب تن

गूकुलस सांयंसय ज़ितिनिज़ूलाह् करव,
जायि जायि हय करव चन्दरमस सान।
प्रेयम स्नेह् बांसुरी लोलु थालन बरव।
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

उल्फतुच़ मूरथा यथ शरीरस गरव,
लोलुवाल्यन वनिव यथ वरिव माय।
मायि हेत अख कदम तुल चु वुछ मा मरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

मेलु लेंग परबतस पथ व्युहुन मा ज़रव,
सारिनय दिल तु शिल अज़ छि तोशन।
ग्यवनि लंज्य आबु ज़ुय नच़नि लंग्य यिम सरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

हुसनु आकाशि किन्य लालु गोहर ज़रव,
तारकन 'फाज़िला' शोलि प्रागाश।
दीवियन गेछ़ वनुन पानु अज़ आवि रव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥



वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥



جے جے!

مَنَس منز گرزان بانسُری ہنز ہوٗد رے
یہ لے بالہٕ کرشنا چھ چانی زبہ جے جے
پزِیُک آلوہ گو وتن منز پیا پے
یہ چانی چھ بُڈ مہربانی زبہ جے جے
دۄدُک شرہیہ تہٕ امرت چھ کھاسین برن نے
چھ اتھ سلسبیلچ روانی زبہ جے جے
ہو کھسن بیٹھ گلاب پانہٕ پزیمی زبہ چھُپے دے
نہ کنہہ چھُپے برابر نہ ثانی زبہ جے جے
دُیِ کم گژھتھ پانہٕ منزل گژھان طے
یمے گون کران پاسبانی زبہ جے جے

जय जय

मनस मंज़ ग्रेज़ान बांसुरी हुंज़ मोंदुर लय,
यि लय बाल् कृष्णा छे चा'नी चे जय जय।

पज़्युक आलवाह गव वनन मंज़ पयापय,
यि चांनी छे ब'ड मेहरबानी चे जय जय॥

दो'दुक स्रेह त् अमृत छे खास्यन बरान नय,
छे अथ सलसबील् च[1] रवांनी चे जय जय॥

मो̮खस प्यठ गो̮लाब पान् प्रेमी चे छुय दय,
न कांह छुय बराबर न सा'नी[2] चे जय जय॥

दुयी कम गछ़िथ पान् मंज़िल गछ़ान तय,
यिमय गुण[3] करान पासबांनी[4] चे जय जय॥

नोठ: 1. सो̮रगुक सर 2. चे ह्यु व 3. सिफत
4. र'छ

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा
येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च



رادھایہ وُنُو شامہ گٹن ژھایہ کرشن جی

دَرشُن چھُ ہاوان پانہٕ کمیو ترایہ کرشن جی

تھُنی نقشہٕ بنی بنی گاشہٕ ہتھس غازِ برہمن گو

لولس تہٕ ہردس سریہ چھُ سرایہ کرشن جی

یتھ جایہ لُوکن مایہ لُوٗرت شریہ تہٕ سمت خوٗی

صُلحچ چھُ وایان بانسری تتھ جایہ کرشن جی

یتھ کرایہ آتش نار تنزر تہ لیشہٕ ہنین لوٗگ

تتھ کرایہ گنگا آبہٕ شہُل سایہ کرشن جی

فاضل اچھ تس تس یاگہٕ تھزر لانہٕ سبزرتس

یس پریمہٕ ساپنے تیر نظر لایہ کرشن جی

۳۴۔ پدر بھی ہیں دادے بھی استاد بھی ہا پسر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی



राधायि वनिव शामु गटन छायि कृष्ण जी,
दर्शुन छि दिवान पानु कम्यू त्रायि कृष्ण जी ॥

थंन्य नक्शि बेनिथ गाशि बुथिस गाज् व्रमन गव,
लोलस तु हृदयस सिरियि छु सरमायि कृष्ण जी ॥

यथ जायि लूकन मायिब्रुत स्नोह तु समुत स्वोय
सुलहुच छु वायान बांसुरी तेथ्य जायि कृष्ण जी ॥

यथ क्रायि आतश नारु तबुर त्रेशि हृत्यन लोग,
तथ क्रायि गंगा अयि शुहुल सायि कृष्ण जी ॥

"फाज़िल" छु बखतस बागि थज़र लानि स्यज़र तस,
यस प्रेमसानुय तीरि नज़र लायि कृष्ण जी ॥

नोट —
त्रायि=नहृजि २ गाज्—पोड़र
३ व्युच—सरमायि

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥





(دھورلی ہنز لے)

لے

یام شہ دیت کرشنہ اوتان نئے
"جے ہری" کوّر زگتہ سمسارن دٔے
اَزتہ زانتھ یا نہ زانتھ گہ بیگھہ[1]
کُلّ دشی جے تھوکھ کن تیتھ لئے

---

[1] لیس کہنہ چیز زندچھ مثلن حیوانات، نباتا نہ جمادات بیتر۔

۳۷- یہ دھرت راشٹر کے جو فرزند ہیں یہ یادھو سب اپنے جگر بند ہیں

کرشنہ مورلی پرتھ زمانس منز وزان

یم چھ بوزان تم چھ بارنی ہوی بنان

یا الٰہی یوت تاثیر چھا شہس

تفرقک ول حل چھ اقوامن گژھان

कृष्णु मुरली प्रथ ज़मानस मंज़ वज़ान,
यिम छि बोज़ान तिम छि बारन्य हिव्य बनान।
या इलाही ! यूत तासीर छा शहस !
तफ़रिकुक वल हल छु अकवामन गछान ॥

याम शह द्युत कृष्णु अवतारन नये

"जय हरी" कोर जगत संसारन दये ।

अज़ ति ज़ानिथ या नु ज़ानिथ गहबेगह[1]

"कुल्लुशयुनहय"[2] थविथ कन तथ लये[3] ॥

नोठ । 1 गहबेगह— कुनि कुनि विज़ि
2 'कुल्लुशयुनय'— यि छाह ज़िन्दह छु
3 लये— आवाज़

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
॥३८॥ कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥

تلا بانسُرِ تُل!

گُپالا اپھولن گُل ۔ ذرا بانسری تُل
ژِ بہ پیارا چھ بُلبُل ۔ ذرا بانسرِ تُل!

ژِ پریمک تہ لُوک مُجسّم مُجسّم
فِدا چھی ژِ بہ کُم کُم ۔ ذرا بانسرِ تُل!

نبس پیٹھ سُلی کوز تمنّا ستارو
قدم تھو قدم تھو ۔ ذرا بانسرِ تُل!

ژِ بہ پرتو میہ ترووتھ، مگر ژھاہ ژھاہ ئے
گجس چانہٕ ماسے ۔ ذرا بانسرِ تُل!

---

۱. ذرا = ہنہٕ ۲. نب = اسمان ۳. تمنّا = شوق ۴ پرتو = جلو

बाँसुरी तुल

गुपाला ! फोलन गुल, ज़रा बांसुरी तुल,
चे प्रारान छि बुलबुल, ज़रा बांसुरी तुल।

चु प्रेयमुक तु लोलुक मुञ्जसम मुञ्जसम,
फ़िदा छी चे कम कम, ज़रा बांसुरी तुल।

मवस प्यठ सुली कोर[1] तमन्ना[2] सितारी,
कवम थव कवम थव, ज़रा बांसुरी तुल।

चे परतव[3] म्य प्रोवुय मगर छायि छाये,
गंजिस चानि माये, ज़रा बांसुरी तुल॥

नोट :— 1. कोरबान 2. :— यछा 3.— जलव

گلشن منز ہر یہ گو، یتھ گاشرو ول
اُچھن میلتو ملی، ذرا بانسرِ تُل!

یمن گوپین منز ژ یہ موٗرلی دِتھ شہ[1]
تمو کوٗر دُیُ لہٗ[2]، ذرا بانسرِ تُل!

ژ بالک اَو سُتھا، ژ یہ شوبھا چھ عظمتھ
ژ زٗ گنج حقیقتھ، ذرا بانسرِ تُل!

کُشش ہش کُشش چھے ژ یہ اَتھ بالہٕ پانس
ژ مرکز[3] جہانس، ذرا بانسرِ تُل!

دماہ سانہٕ بہتو اسہٕ تھوٗو ازٕ لوٗتھ[4] دِل
چھ فاضل ژ یہ مائل، ذرا بانسرِ تُل!

۱۔ شہ = پھوکھ ۲۔ لہٗ = لہٕ = لاَ = انکار ۳۔ مرکز = اڈٕ ہوٚکھ ۴۔ لوٗتھ = لوٗتھ دوٚتھ

गटन मंज़ हुरथर गव यितो गाशरो वॅल्य,
अ'छन मेलतो म'ल्य, ज़रा बांसुरी तुल।

यिमन गूपियन मंज़ चें मोरली वितुथ शह,
तिमव कोर दुयी लह', ज़रा बांसुरी तुल।

च' बालक अवस्था, चें शोबा छय अज़मथ[2]
चु जगत'च हकीकत, ज़रा बांसुरी तुल।

क'शिश हिश कशिश छय चें अथ बाल पानस,
चु मरकज़ जहानस, ज़रा बांसुरी तुल।

दमाह सानि वेंहतो, मे थोवमय लिविथ विल,
छु 'फ़ाज़िल' चें मायिल, ज़रा बांसुरी तुल॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।



منزلی پاٹھ

آکِہ ۔ نابَد ۔ ژَبِر ۔ بادَم چھیکیو
لولہٕ بَرتھیو کرشنہٕ لالو اَز ولو
دَرشُنک وٲنسَن ہیہٕ رُودم آرزو
لولہٕ بَرتھیو کرشنہٕ لالو اَز ولو

ہِی تہٕ یمبرزَل تہٕ جافری تہٕ گلاب
یاسمن، پمپوش، وِرِکیمی، آفتاب
یم دِین کرِ پادِہ تم گُل لاگیو
لولہٕ بَرتھیو کرِ لالو اَز ولو

گل آفتاب

دوسرا ادھیائے

یسن کرشن جی نے کہا

اجو ارجن کا دیکھا یہ رنج و ملال یہ غم و شور دل میں طبیعت بدحال



मोल्, नावद, चेर, बादाम, छिकयो
लोलु वॅर्यंत्यो कृष्णु लालो अज् वुलो।
दर्शनुक वांसन में रुदुम आरिज़ो,
लोलु वॅर्यंत्यो कृष्णु लालो अज् वुलो॥

ही तु यम्बरज़ल तु जाफ़ुर्य तय गुलाब,
योसमन, पम्पोश, विरिकेंम्य आफ़ताब,
यिम दयन कॅर्य पोंदु गुल तिम लागयो,
लोलु वॅर्यंत्यो कृष्णु लालो अज् वुलो॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः॥ १॥
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन॥ २॥
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप॥ ३॥

میانہ وارٕ ان سینہ کِبن پنجرن اندر
اکھ دِلچ کوٹھر چھ پھٹمژ زن کھنڈر
چانہ باپتھ چھُم رلوتھ ٹھوڑ مہ دو
لولہ ہُر تیو کُرشنہ لالو ازٕ دلو

سِریہ ہوکھ ژندرم ڈیکس تارکھ جٹر تھ
ہرنہ چشمن زن ژیہ چھے امرت بُرتھ
دل چھوہ لیم گاہے ژینہ تم روبرو
لولہ ہُر تیو کُرشنہ لالو ازٕ دلو

چانہ ویرے گوکلکی منزل ژھنڈم
وُنی دِرم جمنایہ بھٹو بٹھی پے ٹھوم
دراصل چھُم یَس مہ چونے جستجو
لولہ ہُر تیو کُرشنہ لالو ازٕ دلو

ارجن کا جواب

۲- وہ بولا کہ اے فاتح دشمناں مدد ہو یار! مجھ سے یہ ہو گا کہاں

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥

म्यानि वांरान सीनस्यन पंजरन अन्दर,
अख दिलुच कुठरछि फुटमुच् जन खण्ड़र।
चानि बापथ छम लिविथ थंवमच् में-दो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज़् वुलो ॥

सिरियि मुख चंन्दरम ड्यकस तारख जंरिथ,
हरणु चशमन ज़न च़ें छुय अमृथ बंरिथ।
दिल फोल्यम गाहे च़ु बिहतम रोबरो,
लोलु बंर्यत्यो कृष्णु लालो अज़् वुलो ॥

चानि वेरे गूकलुक्य मंज़िल छ़ंड़िम
वंन्य दितिम जमनायि बंठ्य² पय, पंविम
दर असल छुम बस मि च्योनुय जुस्तजो,
लोलु बंर्यत्यो कृष्णु लालो अज़ वुलो ॥

नोट— १ आबे हयात २ तलाश

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम- स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥



سالہِ ہیتو!

کرشنہِ گوپالہِ! دَماہ سالہِ ہیتو — سرِیہ میشالہِ دَماہ سالہِ ہیتو

میانہِ امارِ! چھ مشکل بے رُخی — وۄنی کۄوو ژالہ دَماہ سالہِ ہیتو

اِنتظارِی، بے قرارِی پرِ البس — رہ کُمس کھالہِ دَماہ سالہِ ہیتو

یا اُسرِی تُل! اَزِ وَسن ہتھ سلسبیل — اُسی بَرہ وپیالہ دَماہ سالہِ ہیتو

فاضِلَن تھوو مَن سجاوِتھ بس ژرِہ کیت

اَز سُلِی کالہِ دَماہ سالہِ ہیتو

طبیعت ہے کمزور دل نرم ہے یہ الجھن ہے اب کیا مرا دھرم ہے

साल यितो

कृष्ण' गूपाल'! दमा साल यितो,
सिर्थ मीसाल दमाह साल यितो।

म्यानि अमार! छे मुशकिल बेरुखी,
वोन्य कवो चाल,दमाह साल यितो।

इन्तिजारो, बेकरारो आलबस,
राह कंमिस खाल',दमाह साल यितो।

बांसुरी तुल ज़न वसन हथ सलसंबील,
अस्य बरव प्याल,दमाह साल यितो।

"फांजिलन" थौव मन सजांविथ बस चे क्युत
अज़ सुली काल,दमाह साल यितो।

नोट: 1. नसाब, तकदीर, 2. बर्गुक सर

॥ ८ ॥ अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप । न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ ९ ॥

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।



مبہ کُن وچھ

رادھایہ بٔرِی پیالہِ ژٔرہ گوپالہِ مبہ کُن وچھ!

از کالہِ یرٔ ہم سالہِ دماہ لالہِ مبہ کُن وچھ!

موٗرلی دِ کینٕہ نٔشہ تہ گلن پھیر پننٕ رنگ

بُلبُل ژٔرہ کرن پوشمنن مالہِ مبہ کُن وچھ!

تن ثھنی تہ بتھِس جلوِ، اَچھن سیٚحر ڈٕلیکِس گہٕ

زن سریہِ ژٔرہ موصوٗمہ کُرِتھ ہالہِ مبہ کُن وچھ!

۱- پھوکھ
۲- گاش
۳- دائیرہ۔ حلقہ

۱- ادھر فوج تھی اور ادھر فوج تھی دل ارجن کا اور علم کی اک موج تھی۔



में कुन वुछ

राधायि बॅरी [1]थाल्' चे गूपाल्' में कुन वुछ
अज काल् यिव्यम साल्' दमाह लाल्' में कुन वुछ

मोरली दि कुनुय शह त् गुलन फ़ेरि पनुन रंग
बुलबुल चे करन यासमनन माल्' में कुन वुछ

तन थंन्य त् बुथिस जलव्', अंछन सॅहर् उधकस गाह
ज़न सिरियि चे मोसूम् करिथ हाल्' मे कुन वुछ।

नोट : 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सुत्य)

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।

گوکُل بٔہ نِمنتھ شامہٕ گٔنٹھ ژھایہ وَنٛدے زو

بادم تہٕ خفر، آلہٕ چھکے تھالہٕ مبہ کُن وُچھ!

اَزچانہٕ کلے ٹھانہٕ وٕژھے ہلرِ بُرتھ چھنم

دامہٕ ژٕ اگر چھکھ تہٕ بٔہ سنبھالہٕ مبہ کُن وُچھ!

دَروازٕ تھاوے وُتھی تہٕ ژٕ بہ پرنتھ جایہ کرٕے زٔول

لوٗ خونہٕ جِگر پارٕ، شمع زالہٕ مبہ کُن وُچھ!

لوٗد لاگہٕ بُکرٕی دوٗر تہٕ سمٔے گٔیلہٕ مبہٕ وُچھی وُچھ

کٔنہہ وایہ کرُن چھُمبہٕ رٔٹتھ نالہٕ مبہ کُن وُچھ!

چھِے وِگنہٕ گٔنڈتھ دٔری تہٕ ژٕ بہ گوپی چھ غزلخوان

زٔنہہ ہرِنہٕ کھیٚلس منزنہٕ دٔرتھ ژھالہٕ مبہ کُن وُچھ!

کٔم مایہ چھُ فاضل ژٕ سری کرِشنہٕ نظر تُل

آسُن تہٕ اَسُن بٔہ ژٕ بہ پٔتھ گالہٕ مبہ کُن وُچھ!

۱۔ زٔول = چراغاں ۲۔ بکرٕی دوٗر = گستاخ ۔

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छायि वंदय जुव
बादम तु ख'ज़ुर ग्रांलु' छकथ थालु' मे कुन वुछ

ग्रल चानि कले ठामु वछ्रय मलरि बंरिथ छम
दामाह चु ग्रगर चख्र तु बं सम्बालु मे कुन वुछ

दरवाज़ु थवय व'थ्य तु' चे हर जायि करय ज़ूल
बो खूनि जिगर हारु' शमह ज़ालु मे' कुन वुछ

थोद लांगि वुकुर्य दोर तु समय गेलि मे वुछ-वुछ
कांह वायि करुन छुमनु रटथ नालु मे कुन वुछ

छय विगनि गंडिथ देयं तु चे गूपी छि गज़ल खां
ज़ांह हरन खेलिस मंज़ न विचथ छालु मे कुन वुछ

कम मायि छु "फ़ाज़िल" तु श्री कृष्ण' नज़र तुल
ग्रासुम तु न ग्रासुन बं चे पथ गालु', मे कुन वुछ



देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥

گُلالہ!

گُلالا! ذرا بَل! گُپالنہٕ دِہے چھےٚ
جِگر چھِل، جگر چھِل! گُپالنہٕ دِہے چھےٚ!

ژٕ بہ چھےٚ داغ سینَس، ہیہ دُکھ چھُم دِلَس چھُم
یہ مُشکل ژٕ کر حَل! گُپالنہٕ دِہے چھےٚ!

وہ زِج نار بُہیہ ہش ژٕ لاگِتھ قباچھکھ
شہجار ژادِرہ وَل! گُپالنہٕ دِہے چھےٚ!

ژٕ بہیہ ہسولن منز، ژٕ پادامُسمت کر
گُنبر اُلفتچ کَل! گُپالنہٕ دِہے چھےٚ!

گُپالا! یمن سینہٕ دُدی آخ رُودِکھ
تُلکھ مَل تُلکھ مَل! گُپالنہٕ دِہے چھےٚ!

तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ।२६।

गुलाला !

गुलाला ! ज़रा वल, गुपालन्य द्रुय छय
जिगर छल, ज़िगर छल, गुपालन्य द्रुय छय ।

चे छुय दाग सीनस म्य दुख छुप, दिलस छुम
यि मुशकिल चु कर हल, गुपालन्य द्रुय छय ।

वोज़ुज नार् ब्रेंह हिश चु लोगिथ कवा छुख,
शिहिज चादराह वल, गुपालन्य द्रुय छय ।

चु बेंह मसवलन मंज़, चु हासिल समुत कर
गन्यर उल्फतुच कल, गुपालन्य द्रुय छय ।

गुपाला ! यिमन सोन् द'य आख रूदिख,
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालन्य द्रुय छय ।



जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।२७।

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ।२५।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।

25/2



ٹھنی ژورِ ہیمیس گورِ کھیٚیتھ کرشنہٕ گپالا

تَس کھڑنہٕ ڈٲکس دٕزرہِ تہٕ دِلس گوبنہٕ مَلالا

ماتایہ ژہ مُوصوٗمہ ووٚنے لفظِ مَکھن چوٗر

اُچھ ییتھنہٕ لگِی بالکا! چھکھ حُسنِ کمالا

نوٹ:-

۱۔ ٹھنی = مکھن ۲۔ گورِ = گوری بائ ۳۔ دزرہ کھینی = ملالہ گژھن ۴ چوٗرِ = فروٗ

۵۔ اچھ لگنی = جسم بد لگنی۔ ۶۔ حسنِ کمال = Beauty Incarnate

اَندَس بیٹھ تِمے لُکھ سبہ واصِل گڑھان

یِمَن ہُنز عِبادَت سے خلوصُک نِشان

نہ تھاوَن طمع، دِیے، نہ ژُکھ، مَن ہُمی

بہ تھاوے سو کھسں منز تِہُند جِسم و جان

(کرشن گیتا ۹/۲۲)

अंदस प्यठ तिमय लुख मे वासिल गछान,
यिमन हुंज़ इबादत-खलूसुक निशान।
न थावन तमाह, दुय, न ज़रख, मनहमी;
बं थावय सोरवस मंज़ तिहुंद जिस्मुजान॥

धन्य चूरि यमिस गोरि स्ययथ कृष्ण गोपाला,
तम खंच न ड्यकस द्रूह तु दिलस गत्र नु मलाला।
मातायि चे मोसूम वेनुय लफ़्ज़ि "मखन चोर",
ग्रछ युथ न लगी बालका! छुम हुसनि कमाला।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।



تھَنہٕ ژوٗر

گبو' دوٗد تہٕ گرُس کیاز ژٕ بہ اندلیشہٕ کُرِتھ چوٗتھ

بھگوانہٕ ! یہِنٛد باگہ پوٗرُت شیہجار' لگن' دوٗت

ژوٗ منگتہٕ' جگر منگتہٕ ژٕ رُح منگتہٕ دل وجان

ہوٗصوٗمہٕ لگے کیازِ اَسی ژوٗرِ مکھن کھیوتھ !

۱۔ اندلیشہٕ کرتھ = کھوژی کھوژی ۲۔ رُح = آتما ۳۔ مکھن = تھنی

پَرکھ یوٗد کرِشنہٕ لیلا گیان لارِ

اَہنکارُک یوٗہے سیماب مارِ

یہ حاصِل گوٗنی تہٕ سپدکھ کیمیاگر

یوٗہے گوٗن ساگرَن منز تارِ تارِ

परख योद कृष्ण लीला ज्ञान लारी ;
अहंकारुक योहय सीमाब मारी ।
यि हासिल गोंय त् सपदख कीमयागर ;
योहय गोण सागरन मंज़ तार् तारी ॥

यव, दुद, त् गुरुस क्याज़ि चे अंदेश करिथ चोथ,
भगवान् ! युहुंद बागि बोरुत शेहजार लुकन वोत।
जुव मंगत् , जिगर मंगत्, च् रुह मंगत् दिलो जान,
मोसूम् ! लगय क्याज़ि असी चूरि मक्खन स्योथ ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२८॥

کرٲن پوزا کرشن جی دوستانس
ہشر تس نش — ہشر یارس تہ یارس

سُداما اکھ فقیراہ تے کرشن شاہ
مگر وچھتو یمن دۄن منز فرق چھا

وفاداری، دیانت، نیک سیرت
تمامن بآگراون پوز محبت

خلوصُک شرٔہہ تہ جذبچ جاذبیت
کرشن جی چھے کرٲن داسن عنایت

اکِتھکُن نَے ـ مہابھارت بیٚیتھکن!
اکِتھکُن تھنے قتل، غارت بیٚیتھکُن!

چھ دوشونٕ منز دِوان مُکتی سہ لوکن
یتھے بخشاں ست آگاہی چھ بھگون

بجر گو یی تہ عرفانک تھزر یی
تھوان قایم یتھی گون چھے کرشن جی

करान पूजा कृष्ण जी दोस्तानस ,
हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस ।

सुदामा अख फ़कीराह तय कृष्ण शाह ,
मगर वुछतव यिमन दोन मंज़ फ़रक छा ।

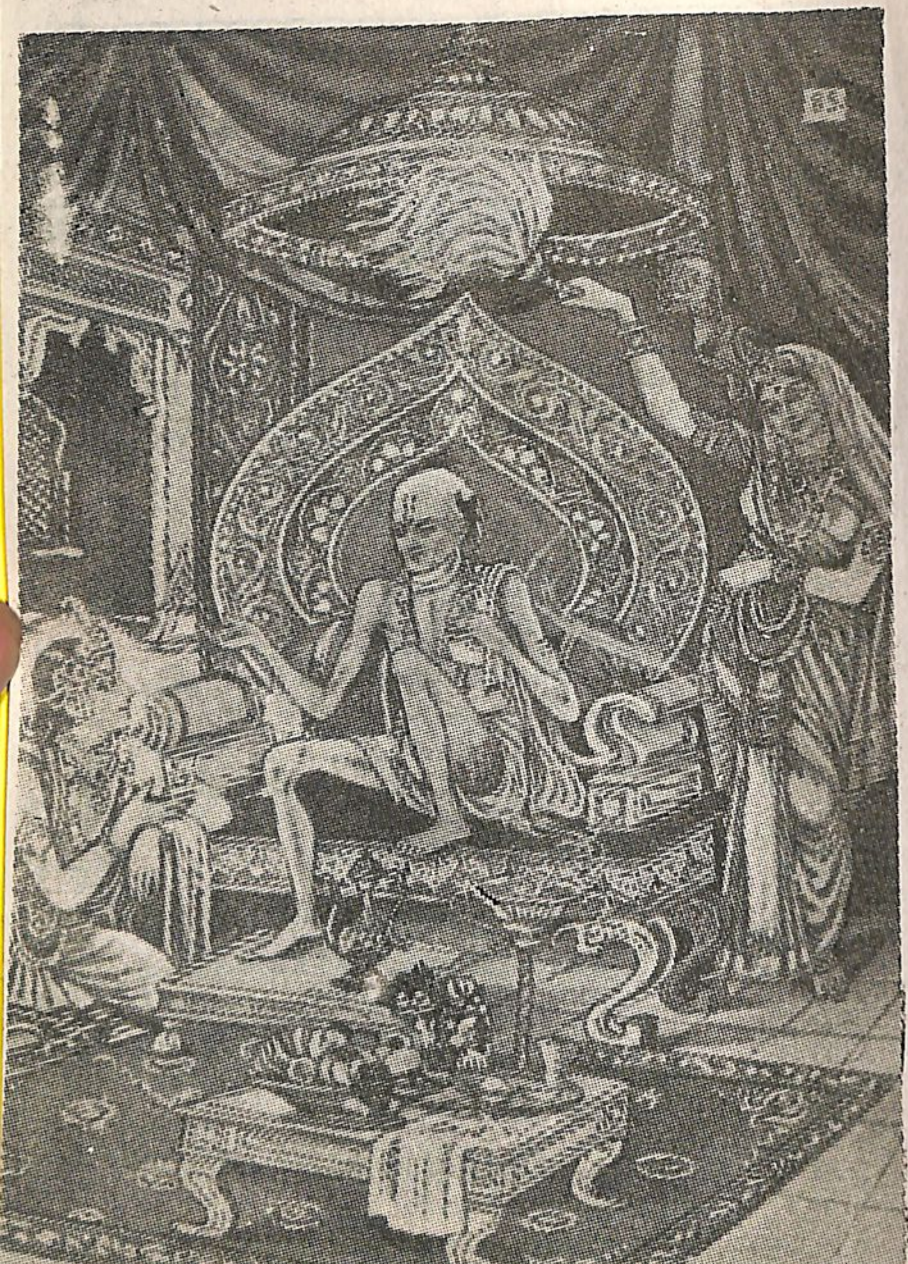
वफ़ादारी, दियानत, नेक सीरत ,
तमामन बोगरावान पोज़ मुहब्बत ।

खुलूसुक श्रेह तु जज़बुच जाज़िबियत ,
कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत ।

अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बियिथ कुन ,
अकिथ कुन 'थन्य'—कतल, गारत, बियथकुन ,

छु दोरवुन्य मंज़ दिवान ओदार लूकन ,
यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन ।

बजर गव ई तु ईफ़ानुक थज़र ई ,
थवान कोइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी ।



भगवान्‌ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की।



کرشن سُداما

کرشن مہراج اکھ بالک اوستھا
میترٕ اوس بالہٕ پانٕک تَس سُداما

یمَن اوس شُرِلہِ منٛز یارانہٕ یارٕز
کرَان تَتھ پیٹھ رشکٕ آس پانہٕ یارٕز

سُداما عمرِ منٛز بروٚنہہ کُن پکان گئے
کرشنِ اوتار تَس پیٹھ الیشورٕ دئے

سُداما اکھ گرٕہستی سادھ بِلکُل
کرشنِ اوتار : مہراج ہمالکِ کُل

کرشن اوتار گو مشہورِ عالَم!
یِوان آسی دَرشنَس تَس سادھ کَم کَم!

کرشن سُداما قصہٕ چھِ پزٕ دوستی تہٕ یاداوٲری ہُند اکھ تاریخی تہٕ پوشون اندٕ لو۔

सुदामा



कृष्ण महाराज ओस बालक अवस्था
मित्र ओस बालु पानुक तस सुदामा।

यिमन ओस शुर्यलि मंज़ यारानु, यारज़,
करान तथ प्यठ रशक ओसु पानु यारज़ ।।

सुदामा वुमरि मंज़ ओंह कुन पकान गय
कृष्ण अवतार तस प्यठ ईश्वर दय।

सुदामा ओस ग्रहस्ती साद बिल्कुल,
कृष्ण अवतार महाराज मौलिके कुल।

कृष्ण अवतार गव मशहूरि आलम,
यिवान ओस्य दर्शनस तस साद कमकम।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ।। यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ।।
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ।।

سُدامہ وُچھ مُلاقات گوڑ ہیہ سپدُن!
نصیبس لیکھتہ میانس کرشنہ درشُن!



تیأری کٔر سُدامن زیٹھِ سفرچ ۔ ژُلن ستی تحفہ پھٹچہ بیلی توملچ
پکان گوتھکھ کڈان گو بڑونہہ پکان گو ۔ کڈان وتھ الفتح زنہہ مانگان گو

کرشن وچھنک تمنا تس دِلس بیٹھ
تہٕ اُتھی شوقس اندر ووت منزلس بیٹھ

اچانک کرشنہ لالس گوپہ گوشن ۔ سُداما از پیم من چھم ہیہ توشن
سُداما آو دربارس اندر ژاو ۔ کرشن مہراج یورے انہ تس دراو

رلوایتھ چھہ زِ سُدامس اوس تحفہ پھٹچہ منز سر ہیتھ تتہ چہ علاقأی زبأنی منز تنڈل نان چھ

येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥

सुदामा वोथ मुलाकात गोंछ़ में सपदुन !
नसीबस लेखत् म्यानिस कृष्ण् दशुन ।

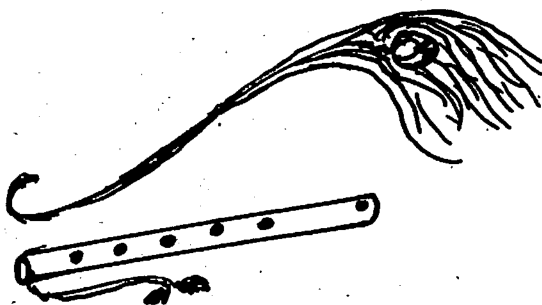
तय्यारी कॅर सुदामन जेठि सफरुच,
तुलुन सूत्य तोफ़ फुटजा "बेल्य तोमलुच"।

पकान गव, थक कडान, गव ओंह पकान गव,
कडान वथ उलफतच जांह मा थकान गव ।

कृष्ण वुछनुक तमन्ना तस दिलस प्यठ ।
तु अथ्य शोकस अन्दर वोत मंज़िलस प्यठ

अचानक कृष्ण लालस गव यि गोशन
सुदामा अज़ यियम मन छुम में तोशन ।।

सुदामा आव दरबारस अन्दर चाव,
कृष्ण महाराज योरय अननि तस द्राव ।



अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

اوِنُن باشان و شوکت، پُور حشمت - یہ چھُسا بالہٕ پانگ شرٛہیہ تہٕ اُلفت

سُدآما کھور کرٛشنن پانہٕ تختَس

کران ساری رشک تَس نیک بختَس

بیپاری تختَس بہتھ اوتار وقتگ - بیپاری کنہٕ چھُس سُدآما یار وقتُگ

اکِس سیتی اکھ بہتھ لول باگراوان - یہ ڈیشِتھ چھِ وزیرن ہوش راوان

سُدامن بیاکی تو ہیلچ ڈالی کڈ نئی

کُرن پیش کرٛشنہٕ لالس یس تھنی تھنی



کرٛشنِ لالس موٗٹھ کنبتھ ساد ہو آو - کھیوان گو تہہ کران آسس نہٕ ٹھُرو

प्रोनुत वा शानु शौकत पूरि हशमत।
यि छुसना बालु पानुक स्नेह त उलफत।

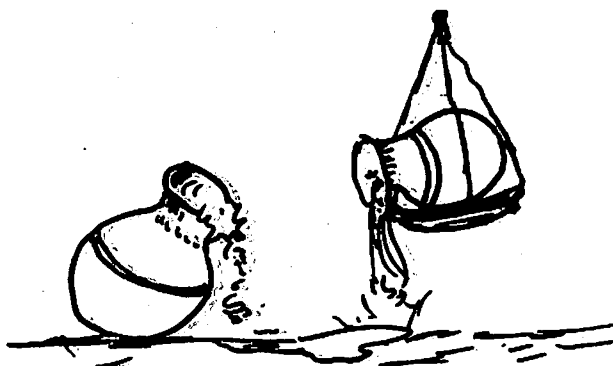
सुदामा खोर कृष्णन पानु तख्तस,
करान सारी रशक तस नेक बखतस।

यथार्थ तख्तस बिहिथ अवतार वक्तुक
हुपार्थ किन्य छुस सुदामा यार वक्तुक।

अकिस सूत्य अख बिहिथ लोल बागरावान
यि डीशिथ छी वजीरन होश रावान।

सुदामन ब्योल्य तोमलुच डाल्य कड नेन्य
करुन पेश कृष्णु लालस युस थनी थन्य।

कृष्ण लालस मोठा ख्यत स्वाद खुब आव
ख्यवान गव, माह करान आसस नु ठहराव।



हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

کرشن لالَن پرزِھس سور حال اَحوال ۔ زمین جایئن زراعت روپیہ تہٕ مال
سُداماونہٕ لوگ "بس ڈوکہٕ ہِن چھَم ۔ چھُ اَتھی منزٕ ستھ گُذران سات کیوَم

سوخن زیٹھان کے دفتر بَرِتھ آئے
اَتتھ پیٹھکُن بہٕ روزان راز سرسائے



سُداما کرِشنہٕ لالس سیتی ہمدم
سُداما تس بہٕ گربارک کھیٔنے غم

سمے کافی گژھان اَتھ کاروبارس ۔ ہوان روخستھ چھُ آخر یارس

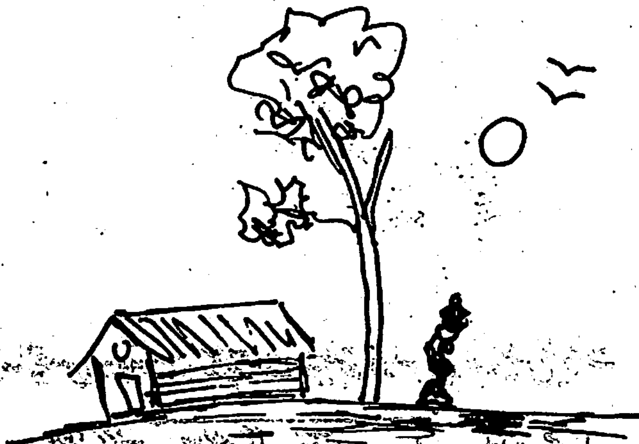
कृष्ण लालन प्रुछुस मोर हाल अहवाल,
ज़मीन, जायुन, ज़िरात, रोपयि तय माल ।

सुदामा वननि लॉग "बसडोकुहन छम,
छि अध्य मंज़ सथ गुज़ारान साथ तय दम ।

सोखन जे ठान गंय दफ़्तर बॅरिथ आय
अत्यथ पथ कुन नु रोज़ान राज सिरसाय ।

सुदामा कृष्णु लालस सूत्य हम दम
सुदामा तस नु गरबारुक कुँहुय गम ।

समय काफ़ी गछ़ान अथ कारुबारस,
ह्यवान रोख़सथ छु ऑ'खु'र यार यारस ।



नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

کَرَان روٚخصَتھ کرِتھ پِھتِھ تَس فَقیرَس ۔ سُہ امِس ظوٗن زِ شُرِ آسن مِہ بیکس

پھِران کوٚتہٕ سُہ آما کرِ شینہ لاگُن ۔ سوٲری بیہِ ٹھ کھٕسِتھ دراو اَز گرَس کُن

دَزان برٛوٚنہہ برٛوٚنہہ چھہ سوٗرنے دَف تہٕ دَم دُم

وَناں سٲری سُہ لما راجہ ہیو چھُم

وٕلِتھ زری بَف تہٕ سونہری تاج بر سَر ۔ سُہ آما از شہَن ہندِ شہ برابر

گرُس کیتھ ووت گامَس منز سُہ آما

خبر کیاہ چھِس زِ گامَس منز سُپد کیا

وُچھن گاہِ کی کرَان تَس پیشِ برِ نِ گتھ ۔ اُہس تعظیمہ سان ناوان گرِ چ وَتھ

ہِنہ برٛوٚنہہ کُنُ ہیکتھ ڈیشِن عِمارَت

عِمارَت چھا اسورگ[2] چھا باغ جنّت

خبر لُج وٕلِ عیالَس رِتم زِ سِتھ[1] آی ۔ دُوان زَن حور غلمان سورگہ منز دراو

سہ ماں پانہٕ حارٲن خواب ڈیشان

یہ سورُے کیاہ وُچھان چھُس چھسیہ زمان

بُہ ما چھُس روومُت بیگانہ گوٚمُت ۔ ییتھ ڈوکس چھُہ از پیلس[3] بنیومُت

۱۔ زِ سِتھ = ہیجاپہ کرِتھ ۲۔ سورگ = جنّت ۳۔ پیلس = شاہی محل۔

करान रोऊसय कृष्ण जी तस फ़कीरस
सुदामस ज़ोन जि शुयं ग्रासन में वेकस ।

फ़िरान कोताह सुदामा कृष्ण लालुन
सवारी प्यठ खसिथ द्राव पनुं गरस कुन ।

वजान ओंह ओंह छे सुरनय दफ़ तु डुम डुम,
वनान सॉरी सुदामा राजि ह्यव छुम ।

वॅलिथ ज़रबफ़त सोनहर्य ताज बर सर,
सुदामा पनु शाहन हुन्द शाह बराबर ।

गुरिस प्यठ वोत गामस मंज़ सुदामा,
खबर क्याह छस जि गामस मंज़ सपुद क्याह

वुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,
ग्रमिस ताज़ीमु सान हावान मरुव वथ ।

हुना ओंह कुन पॅकिथ डीशन इमारथ
इमारथ छा! स्वर्ग छा! वाति जनथ !

खबर लॅज वॅल्य ग्रयालस तिम चॅलिथ आय,
वनान जन हूर गिलमान स्वर्ग मंज़ द्राय ।

सुदामा पानु ह्योवान खाव डेशान,
जि सोरुय क्याह वुछान छुस केंह न जानान ।
कुस

बॅ'मा छुस स्वोनुमुत वेगाह्यु ग्रोमुत,
येसमय ओकस छु अज़ पैकस वन्योमुत ।

وچھن آشینی بہتھ منز محلہ خانس
کران پوزا، برآن لول کرشنہ لائس



سُدآما چھس دپان آخر یہ کمی کوزٕ؟ ـ یہ کمی پرُشن ہیہ پزٕ تھنے لول بیتھ بوزٕ؟
وُزٕھس آشینی امی کرشنَن یورُم اول ـ وندلس شری باتہ ہالین سول تے موج
عمارت، باغ، مندرٕ، فرشِ مخمل ـ تمی کرِتھ عنایت لوٗت جَل جَل
کرشن یس بلیھ کران چھے مہربانی ـ بنان سو ہیر لوٗن انسان فانی

٤٦م ـ وہ انساں برہم گا گیان ہے آسے کرم کانڈوں پہ کب دھیان ہے

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥४७॥

वछिन ब्राशन्य बिहिथ मंज़ महलु खानस,
करान पूजा बरान लोल कृष्ण लालस ।

सुदामा छुय दपान ब्रोंखर यि कम्य कोर ?
यि कंम्य पुरशान में प्रछ्नय लोल युथ बोर ।

वंछुस ब्राशन्य "ग्रंमी कृष्णन बोंहम लोल,"
बन्दस शुर्य बाच् माल्युन मोज तय मोल ।

ग्रमारथ, बाग, मन्दर फर्शि मखमल,
तंमी कर यिछ ग्रनायथ यून जलजल ।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,
बनान सुन हेरि बुन इन्सानि फ़ानी ।

اَکھ سُداما چھا یمیس میٹھ کرٔ دیا موٗلی دارن
اَکھ دِلہٕ چھا یتھ نہٕ بسکیں درٔ تھٔہندِ کنوٗل چرن
یوٗد یژھکھ پانس اَندر تھاوُن کرشن پراوُن کرشن
شرط اوّل اتھ مقامس چھےٚ منٛج زٕ رٕنٛچ لگن

अरव सुदामा छा येमिस प्यठ कर दया मोरली दरन
अरव दिला छा यथ नु बसकीन दर तहंद्य कंवल चरन
येंद यछुरव पानस अन्दर थावुन कृष्ण प्रावुन कृष्ण
शर्त अवल अथ मकामस छुय मनंच, रु हॅचलगण,

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय । सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।



کرشن گو دوٗن سمُت گرٛھنک سمندر
اوتھ وأتھ بنان پرٛتھ قطرٕ ساگر

غرِیبَن مُفلِسَن ہُنٛد مال گوپال
یِمَن کوٚچھ ہُر تِمَن ہُنٛد لال گوپال
یِمَن زنمس اَندر پیتٕرن پیوان یچھ
تِمَن پُرشَن سٟٹھاہ رُت نال گوپال

ग़रीबन, मुफ़लिसन हुंद माल गूपाल,
यिमन कोछ हुंर तिमन हुंद लाल गूपाल।
यिमन ज़नमस अन्दर प्यतरुन प्यवान यछ,
तिमन पुरुषण स्यठा रुत फ़ाल गूपाल॥

कुलग गव दुन ममुत गछ़नुक समन्दर
मोतिय वातिय बनान हर कतर सागर।



گُلن ہُند سمُت پھانپھلاوان کرُشن جی

عجب گُلستانہٕ بناوان کرُشن جی

یمن آسہِ پترِیچ تہٕ پزرِیچ دِلس چھہٕ

تِمن امرِتُک پیالہٕ چاوان کرُشن جی

کرِسٹانی، پارسی تہٕ ہِندی، سِکھ، مُسلمان

نظر کُنی یمن ییٚتھ چھ تراوان کرُشن جی

دوہ دِس ہا شیکرس منز تفاوُت یِشارہٕ ۱ ؎

۱ ؎ فرق

ہِشر آدنک چھےٚ زلاوان کرُشن جی

۵۲۔ جو ہو عقل آزاد جنجال سے نکل جائے تو وہ بے جال سے

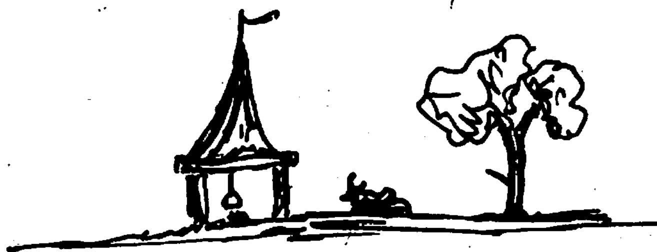
कृष्ण जी

गुलन हुंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी ।

यिमन आसि प्रेयमुच त पज़रुच दिलस छिह
तिमन अमरितुक्य प्यालु चावान कृष्ण जी ।

किरस्तान्य, पारस्य त हेन्द्य सिख मुसल्मान
नज़र कुन्य यिमन प्यठ छु त्रावान कृष्ण जी ।

दोदस शेकरस मंज़ इशारा तफावत
हिशर आदुनुक छुय रलावान कृष्ण जी ।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
॥ समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥
अर्जुन उवाच
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव । स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

52/2

دُیٔ ہُند زہَر، تفرِقہ تٕہیٹ الاٰیش

چھ موٗرلی بجاوِتھ ہٹاوان کرشن جی



کٔتھن منٛز تھٔرِ چھُس تہ موٗرلی اتھٕ چھُس
دلن یِم نہ زٔنہہ تِم زلاوان کرشن جی

یہ متھرا، یہ جمنا، یہ گنگا، یہ رادھا
سَمے گو مگر تو تہ گاران کرشن جی

یِتھ ہردٕ والیو تِمس نِش شوٗزر لوٗب
کھوٗٹس کیمیا چھے بناوان کرشن جی

بران لول گوپی تِمس شوٗزِرشا نے
تِمن منٛز چھہ دوٗہ دِن گزاران کرشن جی

شری پھلوان کا شاد ... سُمرک دوٗہ یِمہ سِتی کوڈ دعا سون چھ بنان

۵۵- تو پھلوان نوٗنلے یتھ تو خوٗ ذات ... جو من ڈیسے کرنے دور سَب خواہشات

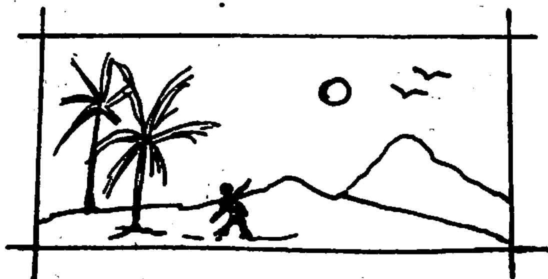
दुई हुंद जहर तफ़रुकुच छ्यट अलायिश,
छु मुरली बजाविथ मिटावान कृष्ण जी।

कथन मंज़ असर छुस त मुरली असर छुस
रलन यिम नु ज़ाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तिमिस निश शोज़र लोब
खोटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तिमिस श्रोचि शाने,
तिमन मंज़ छु दोह यन गुज़ारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच
प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥ यः
सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् । नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

ییٚمِس آسہ وَس زائجِہ لولہٕ نارَن ؛

بلاشکھ تٕمِس پرزِہ ناوان کرٛشن جی

لَچھِس حُب وَچھِس مَنز چھُتَس شولہٕ ناوان

بیاباں دَرِس چھے بَناوان کرٛشن جی

یِمو پونپرِنی گتھ کرِس سِریہ پانس

تِمَن چھے پَنُن جلوٕ ہاوان کرٛشن جی



مَنِنج رآستی نظر لوٚلہٕ زآنہٕ ہاوان ۔ کرٛشن جی سُدآما ، سُدآما کرٛشن جی

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

هولی

از چھ سنسارکۍ پُرش هولی گندان
فطرتُک انگ انگ رنگن منز رنگ بران
کرشنہ! یکھنا لکھ چھ آمتۍ ولسنس
سارنی رۄحس اندر موٗرلی گرزان

अज़ हि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान
फित्रतुक अंग अंग रंगन मंज़ रंग भरान
कृष्णु! यिखना लुख छि आमुत्य वोलसनस,
सारिनुय रूहस अन्दर मोरली ग्रज़ान

यमिस आसि वस ज़ाजिमच् लोलु नारन
बिलाशक तमिस परज़ुनावान कृष्ण जी।

लछ़स हुब, वछ़स मंज़ छु तस शोलुनावान,
बयाबान ज़रस छुय बनावान कृष्ण जी।

यिमव पोश्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,
तिमन छुय पनुन जलवु हावान कृष्ण जी।

मनु'च रास्ती नज़रि पो'ज़ ओनु'हावान
कृष्ण जो सुदामा, सुदामा कृष्ण जी।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।



تسند سرٛہہ پٔش، وڈٕنین، وحشین نام
ژھیناہ چھا تمٕن یمٕ چھُ پالان کرٕشن جیہِ

حسد خوٗن ہار، خشمہٕ ہوٗت نار ژاپان
چھُ زٕلتک زٕلت وٕنی زہہ پیاران کرٕشن جیہِ

یمٕن تاپہٕ کرٕالو چھ ہیٚژ شورٕ کرمژ
تمٕن سیٚکہ لین بیہتھ چھُ باران کرٕشن جی

چھٔبلتھ ژھن یمٕ کام، کرود، موہ، اہنکار
پوبتر تمٕن جان جانان کرٕشن جیہِ

۱۔ شہوت ۲۔ ژکھ ۳۔ طمع ۴۔ غوٗرور ۵۔ سرٛہہ: پیاد

सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।

तसुन्द स्रेह पशन, वुडवुन्यन, वहशियन ताम,
छ्यनह छा तिमन यिम छु पालान कृष्ण जी।

हसद खूंखार, खशम होंत, नार चापान
छु जगतुक जगत वोन्य चे प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे मेच शोर करमुच
तिमन सेकिल्यन प्यठ छु बारान कृष्ण जी।

छलिथ छुन यिमव काम, क्रूध, मोह अहँकार,
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी।



तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।



یمن کنہہ نہ آسان یمن دِل پریشان ۔ تمن بیکسن ہُند چھُ سامان کرشن جی

یہ ژھنی ہیو مجسم چھُ حسنک جمالک
چھُ فاضل دِلس منز بساوان کرشن جی



प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥६५॥

چھ برہمن دھرم - گیان ضبط راستی
لبنۍ - حق شناسی تہٕ پاکیزگی
تغوفل ترک - عیش و عشرت حرام
طمع ژھ نہ تھاوٕنۍ چھلنۍ مَن ہمی
(کرشن دگیتا ۴۲/۱۸)

छु ब्राह्मण धर्म—ज्ञान ज़ब-त रास्ती,
लबुन्य हक़ शनासी तॖ पाकीज़गी
तग़ोफ़ुल तरक ऐश व इशरत हराम,
तमाह, चख नॖ थावुन्य छलुन्य मनहमी
(गीता)

यिमन कांह नु आसान, यिमन दिल परेशान,
तिमन बेकसन हुंद छु सामान कृष्ण जी।
यि थंन्य ह्योव मुजसम छु हुसनुक जमालुक
छु फ़ाज़िल दिलस मंज़ बसावोन कृष्ण जी।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्

आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।



بانسری ہُند ساز گوپیابن کنٛ
چھس آوے کِنی کرشنہٕ شبدن کنٛ تھوٗن
کرشنہٕ شبدو بخشہم گنگایہ جل
تھہ زہنم اتھ منز کوٗرم شوٗد تن بدن



نوٹ:- ۱- شبد = لفظ ۲- بخشہم = دِتہم ۳- جل = آب، پوٗنی ۴- شوٗد = خالص



مہربانی کرے کرشنن سُداما ۔ ژھُکھ زگتس اندر بوڈ نیک بختا
بنان چھا یُتھ دیالو یار یارس ۔ چھ کرشنن دوستی امرت سراپا

मिहरबांनी कंरुय कृष्णन, सुदामा !
चु छुख जगतस अन्दर बोड नेक बख्ता
बनान छा युथ दयालु यार यारस
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा।

बांसुरी हुन्द साज़ गव म्यानन कनन
छुस ममय किन्य कृष्णु शब्दन कन थवन।
कृष्णु शब्दव बखशुहम गंगायि जल,
वाह छूनिम मथ मंज कोंरुम थोर तन बदन



بالہٕ پانٕس لگی تَنے اَز ہیون آے

زۄ وَندَے ! موٗرلی تلا از کرٕشنہٕ واے

چانہٕ حُسنک پَرتوَہ دیدَن کشِش

چون پیکر جذبہٕ : پُترٕچ رسرِیہ کراے

چانٕی حشمت، چانٕی عظمت، چانٕی کتھ ۔ کُنہہ نہٕ سَمیٚس منٛز ژٕرِ ہوٚیی سانٕی رٕاے

سَے = وقت

عظمت = بحر

मोरलोदर

बालु पानस लंग्यतनय अज़ म्योन आय,
ज़ुव वन्दय ! मोरलो तला अज़ कृष्णु वाय ।

चानि हुसनुक परतवा दीदन कंशिश
चोन पयकर जज़बु प्रेयमुच सिर्यि काय ॥

सांन्य हशमत, चांन्य अज़मथ, चांन्य छव,
कांह न समयस मंज़ ब्रें ह्युव यी सांन्य राय ।



(१) आय---वांसि ह्तुंद त्रख, (२) परतव—जलवु, दीद – अछ,

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥
विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥७१॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥

१०/४

چانہٕ موٗرلی ہٕنٛز دارٕ سے! اَوتار ژِیے

داس پیارٕ ژھی ژٕ اَز کاسُکھ اَنیا ے

اکھ دَمہٕ چٕشمَن اَندَر کرٕزَم قرار!

عمر لوسَم ژٕ یِی وچھان کرٕ ہیون پا ے — پاے = پیاد

ژٕ ے چھُہَم پیرٕ یمُک صَنَم، رُوٗ ہُک ہَرش — ہرش = سرور

سارِنٕے لول باکراوٕن چون دا ے — دا ے = مشہور

یُوت ژُو ر سوٗ ندَر بنہٕ وتھ چون سوٗ کھ

حارٕتن گو پانہٕ کارٕیگرٕ خوٗ دا ے

ساسہٕ بُدِی رنگ بَدٕلوٗ نِ رُوٗدِم زنَم

یَس ژٕ روٗس مَنٛز چھُکھ بُسٕتھ سُے اکھ ہوٗا ے

چانہٕ پٕتٕرِیچ چھُہ مَنٛس لٔجِتھ مہ چھَم

لولہٕ برٕ تیو! فاضِلس چھے چانٛی ما ے — ما ے = پریم

चानि मोरली हुंज़ द्र'य अवतार चुय,
दास प्रारान छी च़ अज़ कासुख अन्याय ॥

अख दमाह चश्मन अन्दर करतम कगार,
उमर् लोसम चेंय वुछान कर म्योन पाय ।

चुय छुहम प्रेममुक सनम, रूहुक हृर्ष,
सारिनय लोल बांगरावुन चोन दाय ॥

यूत च़ोर सोन्दर बनांविथ चोन मोख,
हांरतन गव पानु कांरीगर खोदाय ।

मासवंश रंग बदलुवुन्य रूदिम ज़न्म,
यस ज़ुवस मंज़ छुख वंसिथ मुय अख 'बेवाय ॥

चानि प्रेममुच छिह्य मनस लंजमुच मे छम,
लोलु बेत्यों । 'फ़ाज़िलस' छय च्यांन्य माय ।

(१) माय---वांसि हुंद त्रख, (२) परतव—जलव,
दोद – अछ,

(१) पाय—चार, (२) हृर्ष— सरूर,
(३) दाय—मशवर, मोख—बुथ, (५) माय—प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।



یکہ لی ہندِ شہ گیان چھے بانسری
یس گنن گو ونہ لوگ جے ہری
من پوترِ یس سپد بس سے چھہ شاہ
کیاہ مسلمانی کرِ یس کیاہ کافری

کُنی یَس نظر تَس چھ گیانی وَنان!
تمِس نِش نہٕ چنڈال، برہمن زٕ جان!!
دُئی ہُند سیٹھاہ دور یحساس تَس!
سُہ گاو، ہوٗن تے ہوٗس چھ یکسان وینٛدان

(گیتا جی ۱۸/۵)

گیتا ۱۸/۵

कुनी यस नज़र तस छि ज्ञानी वनान.
तमिस निश नु चंडाल, ब्राह्मण ज़ु जान।
दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस,
सु गाव, हून, तय होस छु इखसान व्यंदान

(गीता)

यकदिली हुंद शाह ग्यवान छय बांसुरी
यस कनन गव वननि लोग "जयजय हरी"।
मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,
क्या मुसलमानी करयस क्या का'फ़िरी ॥

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः । सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति । यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।



بالہٕ پانس لاگہے جامے چھُتی
کرشنہٕ لالو! بس ییٚتی سمکھہ تتی

پانہٕ از گنگا یہ ہُند جل باگراوُ
چاوتھ امرت ہبہ ہوی ترپتے ہُتی

یم نِشاطس، شالمارس پوس پھُلِ
ژاری ژاری تم لاگہے کالے پُتی

जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥५॥

وجودک سر۔ مَنِچ روشن سبیل بن
ذرا ظاہر مشر۔ اندری دِلس سن
کرُن آوُر پنُن آسُن نہ آسُن
دِلچ حرکت بناوُن کرشنہ سمرن

वजूदुक सिर, मनुच रोशन सबील बन
ज़रा ज़ाहिर मशर, अन्दरी दिलस सन।
करुण आवुर पनुन आसुन नं आसुन
दिलचि हरकथ बनावुन कृष्ण स्मरण ॥

कृष्ण लालो

वाल पानस लागह्य जामय छेती,
कृष्ण लालो बस येंती समखक तंती।

पान अज़ गंगायि हुंद जल बागराव,
चावनस अमृथ म्य हिव्य त्रेशे हेती ॥

यिम निशातस शालमारस पोश फोल्य,
चांयं चांयें तिम लागह्य कारे पंती।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥६॥

نوٗرٕ آگُر بریہ ہو کھ چھےٚ اَنہٕ لوٗٹ

ہیرِ لوٗبن پانس پَرٕوَن ہٕندی گٕہہ دُتھی

خوٗرہٕ ہُند پیکر تہٕ تھٕنی ہیوٗ چھےٚ شریہ

نالہٕ رٹھِتھ اَکھ دٕہہ لرَوزِتم اُتی

چوٗن آکار چھُم سَتَن بَرٕنَن مہ آش

یم شعوٗرٕکی بَرَ دوٗبے تھوٗ ہے وُتھی

دِل چھ بھرستٕ تےٚ کرٕودھ اَز سمیک سُبھاو

بیر اَکھ اُکی سُندٕ تھوان سمیکو مُتی

چھی فدا پادَن گُمتی ہمیوشہ سَر

کھِبل چھ آسَن ہنتھ بَہتھ آیے کتی

اَکھ ہُنو ہو رلی دُرن آدیش لوٗز

فاضلا! سَت دوٗپ چھ داسَن ہُندٕ یُتی

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ । जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।

नूर आगुर- मिर्ययिमोख छुम आनु पोंट,
हेरि बोन पानम प्रवन हुन्द गाह वंथी ॥

हरि हुन्द पंकर तु थन्य ह्यव छुय शरीर,
नालु रटुहथ अख दमा रोज़ुम अंती ॥

चोन आकार छुम सतन वरन्यन में आश,
यिम शऊरक्य बर दोहय थंव्य मय वंथी ।

दिल छि भ्रष्ट तय क्रोध प्रज समयुक सोबाव,
बंर अख अंक्यसुन्द थवान समयिवय मंती ॥

क्रो फ़िदा पादन गोमुत्य पम्पोशि सर,
स्यख छि मासन ह्यथ बिहिथ आरय कंती ।

"अख बंनिव" मुरली दरुन आदेश पोज़,
फाज़िला ! सत दोंप छु दासन हुन्द पंती ॥

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।

1/1



رادھا وَنان چھَ ناتھَس ۔ دوٗد بانچھ ہیوٗ ژٕہ پیکر
درشُن میہ کاٚلی دِکھنا! چھُم چانہِ دوٗرِ ہُرکٕ[1] شَر
اُچھ میانہِ لوسہِ واٚنُس ۔ گنگایہ بلیھٕ ژٕہ پیاران
موٗرلی شبد گرِدھان چھیم ۔ گوٗشن[2] ژٕ بَتھ بُٹھِس تَر
اُندی اُندی ژٕہ رقصہِ بایتھ ۔ گُمی موٗرِ کھیوٗل اُنتھ تھوٗو
یِم چانہِ لولہِ پیرِتھ ۔ رنگین پَرَ تہِ زیوٗر[3]

۱۔ دوٗرِ ہُر = فراق ۲۔ گوٗشن = کنن ۳۔ زیوٗر = گہنہٕ

बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥१०॥
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥१२॥



राधा वनान छें नाथम—दुद, मांछ ह्युव चे़ पैकर
दर्शुन में काल्य दिखना! छुम चांनि दूरिहक शर ।

मंज़ म्यानि लोसु वांसन— गंगायि प्यठ चे़ प्रारान
मुरली शब्द गछ़न छ्युम गोशन चुं यथ वंठिस तर.

श्यन्द्य मंन्द्य चे़ रकसु वापथ कंम्य मोरु ह्योंल मंनिथ थोंव
यिमचानि लोलु पूरिथ रंगीन पर तु ज़ेवर ॥

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

१०/१

نَے

(نَے چھ بہانے .... "مورلی شیداہ اَسہ گوکُلن وَنن چھ رادھا کرشنہ ہے آو")

گُس تام وَایان! اُلکھ چھ دَپان نَے چھ وَزان نَے
گوپالہٕ تٔریہ یم ویدٕ چھ دَپان
نَے چھ بہانے ... نَے چھ بہانے

تصویرِ آتش خانہ مجازٕ سٕ چھُ دِوان ڈول
مَنزٕ نارٕ بَرٕہن طورِ سنگر
تو دَزان نَے ... نَے چھ بہانے

نَے نغمہٕ شیرین۔ ہَن چھُ بَرٕمان۔ زٕو چھُ زوان کل
یُتھ نغمہٕ بَرانٕ ہعرفتک
سَرٕہ چھ بَران نَے ... نَے چھ بہانے

(नय छ बहानय

"मुरली शब्दा गव असि कनन
वनन छि राधाकृष्ण है प्राव"

कुस ताम वायान लुख छि दपान नय छि वजानय,
गूपाल चे यिम वेद छि दपान,
नय छि बहानय—नय छि बहानय

तसवीर प्रातशखान् मजाज़स छु दिवान डोल
मंज़ नार, ग्रेहन तूर, संगर
तोति दज़ान नय—नय छि बहानय

नय नगमु शीरीनमन छु बमान, जुव छु जुवान कल
युथ नगमु प्रावुन मायंफतुक
श्रेह छे बरान नय—नय छि बहानय ।

13/1

تِیتھ گیانٔ حاصِل یِیدِ ، تھوکھ زانٔی اندر مَن ¹ علم

سوٗ زان تاوِتھ اوم تہٕ کُنٔے

ھُوٚ چھ پِرَان نے ---- نَے چھ بہانٔے ² ایشور

زَن سوزِ وَنس زوٗنگ چھُ لگان ، لام لگن لام جنگلس

مَن وِہنہٕ لگان تاوِ ہتین

شولہٕ ژٕران نے ---- نَے چھ بہانٔے

وَن سوٗر گرٔھتھ روزِ ہٹاہ ، ژوٗرِ بہتھ لوٗب

تُھکی پانہٕ تھلان وٗالہِ تھوٗے

آسہِ گِران نے ---- نَے چھ بہانٔے

فاضِل ! شریک ساز کُنٔے ، سوز ہگرہ ہیوٗن

گوپالہِ ! لِوٚیے لولہٕ ہتین

منز چھ سِران نے ---- نَے چھ بہانٔے

त्युथ ज्ञान हांसिल सपदि थवख ज़्यन्य अन्दर मन
सुय ज़ान हांविथ ओइम तु कुनुय
'हू' छे परान नय—नय छे वहानय।

जन सोज़वनस ज़ोंग छु लगान लाम लूकन लाम
मन वुहनि लगान ताव हृत्यन
शोलु छ़टान नय—नय छि वहानय।

वन सूर गंछ्‌ित रोज़ि हटा चूरि बिहिथ लौव
तेध्य पानु थलान वालि तवय
श्वासि मरान नय—नय छि वहानय।

'फाज़िल'! शरीरुक साज़ कुनुय सोज़ मगर व्योन
गोपालु! योहय लोलु हृत्यन
मंज़ छे सज़ान नय—नय छे वहानय।

नोट— ग्यान—जानकारी, एकल
हू—ईश्वर, अल्लाह।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥१६॥ तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते। प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥१७॥ उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्। आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्॥

16/1



میہ چھا اِنکار، ماتا ! کیازِ پرزُ ژھنم

میہ لے گوی گاو ماتاے سٕتی ہر دم

دوٚہچھ دوٕد ماسہ چھُم ژوٚر ژوٚرے

ہتے پوٚز بوز تے مکرے تہٕ لوٚرے

دوٕدکی ژڈی چھیتھ تہٕ روٚزِم کُل ہیہ اَتھکُن

لوٚہے گوٹھانہٕ ووتھ بھگوانہٕ سُند دیُن

نِجاتہٕ اَوتار چھینہٕ اپرہیکان وٕنِتھ۔ تمن ہنزن کتھو۔ تہٕ کامن ہنز چھُ شو زر آسان۔

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते । वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१९। कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥ यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥



पोंज़ अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याज़ि प्रुछ़थम
मैं लय गोय गाव मातायि सूत्य ह्ऱरदम ।

दौपुथ दुद मा सां चोथम चूरि चूरे
हतय पोंज़ बोज़तय मलरे तु टूरे ।

दुदुवय नटच्य चथ ति रूज़ुम कल म्य प्रथ कुन
योहय गव ठानु बोथ भगवानु सुन्द द्रुन ।

پَزر گو سِریہِ چھا پوشیدہ رۄزان
کرِشن پۄز وَننہِ چھا زَنہہ کانسہِ کھۄژان؟

نۄۓ پَزرِچ یہِ رۄزان وانسہِ پابَند
لوکُٹ بالک اَمیِ کورُت عَقلمَند



یہِ دَھرتی گاو ماتا پیٹھ چھہَ تۄشان
دِوان دۄد تھۄنی کرِشن آخر بَناوان

کھیوان تھۄنی اَمرِتکی نۆٹ داہِہ چاوان
اُمِس جگ ایشوَر پَدوِی چھہ دِیاوان

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥



पज़र गव सिरियि छा पूशीदु रोज़ान
कृष्ण पोंज़ बनुनु छा ज़ांह कांसि खोज़ान ?

नंहंज पज़रुच न रोज़ान कांसि पाबंद
लुकुट बालुक प्रेमी कोंरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,
दिवान दुद, थंन्य, कृष्ण माखुर बनावान ।

स्यवान थंन्य अमृतुक्य नंटय दामु चावान
प्रेमिस ज़ग ईश्वर पदवी छु द्यावान ।

लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥ अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

२२/१

کرٛشن اَکھ بالکا پزٕرٕک مجسّم
فخر زٕگتس یوہے اوتار۔ آدم

کرٛشن بُتراژ بیٹھ صُلح عَلامتھ
یوہے اَکھ پوشِونی اَمنچ کرامتھ



کرٛشن گوٚیس چھُ مورلی مَنٛزٕ سہ الہام
یَمیُک اَکھ صدا لوٗکَن چھُ پاٛ غام

کرٛشن گو ظُلمہ ایوانن سو گگراے
یَنیٚمیُک ذٕسی لابہ اَپزِس تالہِ تٕرٕکراے

کرٛشن گو مَقصدٕک نٕزدیک مَنزِل
اَمِس نِش سارِنے حاصِل گژھِ دِل

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः । मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥२५॥ वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन । भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥ इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत । सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥

कृष्ण अख बालुका पज़ रुक मुजस्सम
फ़कुर ज़गतस योहय अवतार आदम ।

कृष्ण बुतरांच् प्यठ सुलहुच करामत,
योहय अख पोशिवन्य अमनुच अलामत,

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज़ सु इलहाम,
यम्युक अख अख सदा लूकन छु पैगाम ।

कृष्ण गव ज़ुलमु अयवानन सु ज़गराय
येम्युक दंसलाबु अपज़िस तालि तंच् क्राय ।

कृष्ण गव मकसदुक नज़दीक मंज़िल
अंमिस निश सारिनुय हासिल कुनुय दिल ।

25/1

کرٛشن گو دوٚن سمُت گرٛھنک سمندر

اوٚنتھ وانٹھ بنان پرٛتھ قطرِ ساگر

کرٛشن گو یکدِلی ہُند اکھ سُہ آگُر

وِزان ییتھ نِش چھُ بدہ موٚنتال تے سُر

کرٛشن گیتایہ ہُند گہتے منٛج آش

گٹہٕ، تارٕکین منٛز سرٕیہ پرٛاگاش

کرٛشن گو اکھ پوٚتر رُوپ پرٛیمک

تصوّر دِل پسند سوٚندر شریرُک

کرٛشن گو زلزلہ کرودس تہٕ کامس

سُہ خالِص سوٚن کرٛان کم مایہ ترٛامس

کرٛشن ہردچ چھُ پزٕ آئینہ داری

اہنکارس بناوان انکساری

कृष्ण गव दुन समुत गछ़नुक समन्दर
ऑतथ वातिथ बनान हर कतर् सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर
वज़ान यथ निश छु मद्मोत ताल तय सुर ।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आश
गटन तारीकियन मंज़ सिरियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक
तस्सव्वुर दिलरुबा सोंदर शरीरुक ।

कृष्ण गव ज़लज़ला क्रूधस त कामस
पु खालिस सुन करान कम मायि त्रामस ।

कृष्ण हृदयिच छु पंज़ आईन् दोरी
अहंकारस बनावान इन्कसारी ।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

کرِشن گو ٹھنی دوہ دِچ ہائے، شُھل سریہہ
موہس، لوبس کُنی برُیہہ، زالوِنی ریہہ

کرِشن گو پوشوُن گنگایہ ہُند جل
چھلان ہیندِس، مُسلمانس دِلک مل

کرِشن گو فکرِ تارُن وأنسہ ہُند وُیژ
سہ چھا اُکُ سند ؟ سہ گو پرتھ کأنسہ ہند وُیژ

کرِشن گو آتما ست آتما بس
تمِس سوُرے چھ حاصِل دِیہ گوِیس

۱۔ مائے = محبت ۲۔ برُیہہ = شولہٕ (شعلہ) ۳۔ موہ = ہموُرے ہیونُے
طمع۔ ۵۔ وُیژ = جاداد ۶۔ ست = دائمی پزر ۷۔ دِیے = مہربان

شری بھگوان کا ارشاد دسواں ادھائے

اے سخن سنج بھگوان بھیرُیوں ہوئے۔ کہ سن آئے قوی دست پیارے مرے

कृष्ण गव थंन्य दुदुच मालय शहुल ग्रेह
मुहस लूबस कुनी ग्रेह जालवुन्य रेह ।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द जल
छलान हें दिस मुसलमानस विलुक मल ।

कृष्ण गव फिकिरि तारुन बांसिहुंद व्युच
सु छा ग्रंक्यसुंद ? सु गव प्रथकांसि हुंद व्युच ।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा बस
तमिस सोरुय छु हासिल दयपि गव यस ।

مہاساگر کرشن یمہ دل بناوان
تمے تس منز گوتکہ دردانہ ژھاران
تلاشکہ مرتہ گیانکہ نیٹھہ منزل
شعورکس لاشعورکس تمہ بساوان

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।
तिमय तस मंज़ ग्वन्क्य दुरदान् छ़ारान ॥
तलाशिय मर त् ज्ञानक्य नीठ्य मंज़िल।
शऊरक्य ला शऊरक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले.

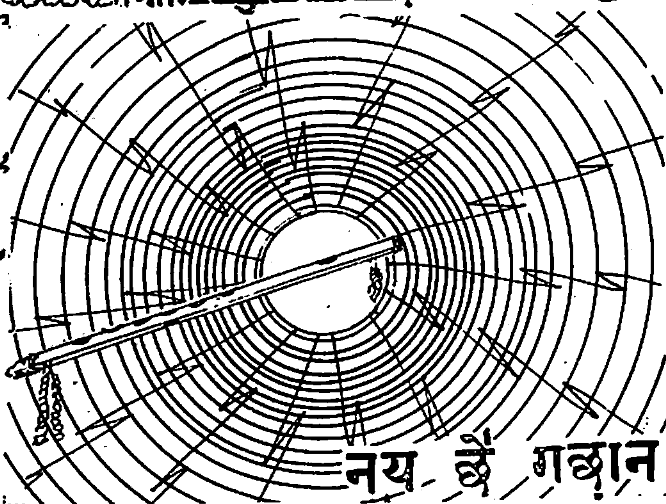
भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।

نے یا مورلی

ہے! نےَ چھ گرٛدھان شولہِ وٕہان، نار ہیٚسہٕ نار
رٛتہٕ ژینوٗنمن کرٛشنہٕ ژٕ بہٕ کُن
لار ہیٚسہٕ لار

لاہوتہٕ[1] پلیٚچھ زٕنٛز چھ کرٛان کُنہِ کنٛگس طور
آکاشہٕ پھٹُک سِریہٕ ژٕ بہٕ نِش
جار ہیٚسہٕ جار

دِل پانہٕ برٛہمان۔ کیاہ چھ دُئی[2]۔ کیتھ چھ وٕنان ہیر[3]
یِم چانہٕ نِہج پکی تہٕ سیدی
یار ہیٚسہٕ یار



नय छे गछान

हे नय छे गछान. शोलु वुहान, नार हसा नार !
रेह चेनुवन्यन कृष्ण चेकुन
लार हसा लार !

लाहूतु प्यठ'च जुच् छे करान कुनिरु' कँगस तूर,
आकाशि प्यठुक सिरियि च़े निश
जार हसा जार !

नोटः-
१ लाहूत—तस्सवुफक थोद मुकाम २ कोहि तूर ।

दिल पानुब्रमान क्या छे दुई कथ छि वनान वैर
यिम चानि नहज पेक्य त सपुद्य
यार हसा यार !

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः

گوپالہِ ! یِژھکھ آہ پلس آب کرکھ آب
اَکھ ژِہ تہٕ دوٚہ دس ہوٗکھر لگان
دار ہِسہٕ دار

یم چانہٕ کلے پھٹٕ تہٕ چینیکھ وۄنتھ تہٕ یپدی وۄنتھ[۱]
تم قُلزمن[۲] ترٛی تار ہوٗشکھ
تار ہِسہٕ تار

۲ دریاو

دھن مار لوٚلہٕ : کیٚہہ مگر من چھ گنجک نیاس
یُس مار زہ یچھ، تس نہٕ گنج
مار ہِسہٕ مار

مار تھ تہٕ زلوٗانم، کرشنہٕ لوٗ بم. من مبہ سرفراز[۳]
اَتھ یرٛمہ پلنجے بیٹھ مبہ گندم
زار ہِسہٕ زار

۳ پرس

गूपालु यछ्रख आरु पलस आब करख आब
अख चूह तु दोदस होंखरि लगान
दार हसा दार !

यिम चानिकले फट्य तु चेयख व्यथ तु सपृद व्यथ,
तिम कुलज़ुमन तेर्य तारु मौशुख
तार हसा तार !

धन हारु नोला, के हुन मगर मन छु गंजुक न्यास,
युस हारि चे पथ, तस न कुनिच ।
हार हसा हार ।

हारिथ ति ज़्यूनुम कृष्ण लबुम मन मे सरफ़राज़[1]
अथ प्रेमु पेंज, प्यठ मे रयुदुम
ज़ार हसा ज़ार ।

नोट — १ सरफ़राज़—प्रसन्न, ख़ोश ।



एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ।।७।। अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ।।
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् । कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ।।

لِچھ وانُنسہ گُرِھتھ کرِشنہ ژِہ مایکھ تہ مِہنکھ دِل
اَتھ زنمہ پھرِس ژھیہ چھُ لگان — ژھیہ = سات
پیار ہیٚسہٕ پیار

کُملاوُ ہیٚہ وُٹھ تہ گھیے پھِرتہٕ میہ کُن نیبن ! — نیبن = اُچھ
لوٗد تیر نظر دِکھ تہ دپے
مار ہیٚسہٕ مار

کرِشنا ! میہ دِتھِم سوز نتے نے میہ دِلس زِدی
چھُس دوٗہ ہن شھہن پلیٹھ پتھ ونکہ توکھ
دار ہیٚسہٕ دار — دار = دِو دار

موٗرلی چھ ندا - ہالفنی ئے - شہ چھُ امیک نروٗ — فرشتہ
رح بالہ کرِشن ہا فاضلنی یم
نثار ہیٚسہٕ نثار !

लछ वांस् गछिथ कृष्ण् च् मा यिख त् मुहकमन
अथ ज़न्म् फिरिस च्युह छु लगान
प्यार हसा प्यार ।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मेंकुन नैन
योंद तीरि नज़र दिख त् दपयं
मार हसा मार ।

कृष्णा में द्य तथभ सोज़ नतय नय म्य दिलस ज़'द
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक
होंख दार हसा दार ।

मोरली छु निदा, हातफुन्य लय, शह छु अम्युक ज़ुव
रुह बाल् कृष्ण् फांज़िलन्य यिम
शार हसा शार ।



तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥१०॥ तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्॥१२॥

१०/१०

موٗرلی تہٕ موٗرلی دار

کرشنہٕ موٗرلی پیکرِ سوز و گداز
دِلربا، دِلکش، ہوٗدر تےٚ دِلنواز
یےٚ اَچھ عرفان تہٕ شہٕ قدسی صفات
پانہٕ موٗرلی دار چھُ سرتا پا اعجاز

میٖثرونےٚ

میٖثرونےٚ پڑانہٕ سمپچ بانسُری زان
یہانہٕ! گوژھ وچھُن نےٚ کُس چھُ وایان
شریک سوز لافانی شہس تام
شُہک مالک کرشن اوتار انسان

मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैंकरे सोज़ो गुदाज़,
दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज़ ।
लय अमिच इरफ़ान त शह कुदसी सिफ़ात
पान मोरलीदर छु सर ता पा मजाज़ ॥

नोट :-

१ पैंकर—कालब, जिसम=मुज्जसम
२ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन वोल
३ मोरलीदर—मरली वोल, कृष्ण जी ।

मेंचि़व नय

मेंचि़व नय प्रानि वकतुच बांसुरी ज़ान
बहानय, गोंछ़ वुछुन, नय कुस छु वायान
शरीरुक सोज़ लाफ़ानी शहस ताम
शुहुक मोलिक कृष्ण अवतार इन्सान ॥

नोटः-

१. नय—मोरली

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥१४॥
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥



کرشن بانسری ہیتھ برتھ سینچر زن اتھ

یہ مستی تہ فرہتھ چھ زن لوزونی چیتھ

یہ سنگیت چیتھ آئے کرشنا

یہ مورلی ہوڈ رائے کرشنا

ژ زگتس یہ نے وائے

کرشنا کرشنا!

— —

ژٕ شوقہٕ سان رُمَس رُمَس اگر کرٛشن گرکھ
مرکھ ژٕ مرنہٕ برُونٛہہ- توٚے نسہٕ ژٕ زنٛہہ مرکھ
چھٕ زنمہٕ پھِرۍ لگان تمَن مشد گرٛھان یمَن
ترکھ ژٕ بوسرَس اگر کرشن کرشن کرکھ

च़ुशोकु सान रुमस रुमस अगर कृष्ण गरख
मरख च़ मरन ब्रोंह-तवय नसा च़ ज़ांह मरख
छि जनमं फिरय लगान तिमन मंशिद गछान यिमन
तरख च़ भवसरस अगर कृष्ण कृष्ण करख।

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ बॅरिथ सेहर् ज़न अथ
यि मस्ती त् फरहथ छि ज़न बोज़वुन्य चथ

यि संगीत चथ आय कृष्णा !
यि मोरली मोदर् माय कृष्णा !

च़ ज़गतस यि नय वाय, कृष्णा कृष्णा !

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

یہ لے زَن مَنَس نار   دَزان زَن ژَنڈَن دار

کران زرح چھ بیدار   یہ یَس لوٗگ سُہ ہُشیار

تِمِس کینہہ نہ پَرواے کرشنا!

یہ موٗرلی گَر شُنم کرلے کرشنا!

مَنَس کینہہ نہ پَرولے

کرشنا کرشنا

یہ لے لوٗزنک ہیس   دِوان ایشور یَس

سُہ لوکَس اندر مَس   کران ستشبجہاتس

تِمِس نَش پرژرر ڈرلے کرشنا!

یہ موٗرلی چھ بُڈشاے کرشنا!

ہیسیچ وَتھ چھ سیٗز تراے

کرشنا کرشنا

यि लय जन मनस नार दज़ान जन चंदन दार
करान दिल छु बेदार यि यस लोंग सु हुशियार

तमिस कौंह नु परवाय कृष्णा !
यि मोरली ग्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कौंह नु परवाय, कृष्णा कृष्णा !

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस
तमिस निश रुचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छै बंड शाय कृष्णा !
ह्यसच वथ छै स्यज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

श्रीभगवानुवाच
हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥

پہ نے پھِر گوشَن   تہِ لُج لام پوشَن

چھ بُلبُل تہِ توشَن   حقیقت چھہ روشَن

یہ موٗرلی چھہ بے زھاے کرِشنا!

یہ موٗرلی چھہ یکتاے کرِشنا!

یہ بے رنگ بے زھاے

کرِشنا کرِشنا



دَھرم ، کرُم تہِ انسان   سبھٹاہ کٔرتی سبھٹاہ جان

یہ ساڑی چھہ مانان   چھہ مُنزِل سہ بھگوان

چھہ گیتا تہِ ہمراے کرِشنا!

یہ موٗرلی ! زیہ یوٗز آے کرِشنا!

سمے سور ہمراے

کرِشنا کرِشنا

वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥

यि लय फीर गोशन त् लंज लाम पोशन
छि बुलबुल ति तोशन हकीकत छे रोशन
यि मोरली छें वे छाय कृष्णा!
यि मोरलो छें यकताय कृष्णा!
यि बे रंग बे छाय कृष्णा!

नोट: १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुन करन वाजन ३ बेरंग—बे इम्तियाज



धर्म, क्रय त इन्सान स्यठा एल्य, स्यठा जान
यि मोरी छि मानान छु मंज़िल सु भगवान
छे गीता ति हमराय कृष्णा!
यि मोरलीं चें पोज़ आय कृष्णा!
समय सोर हमराय कृष्णा कृष्णा!

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् । सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।

इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥ रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।

نَئے لَے چھ یکسان کُنی ہِنٛدۍ مُسلمان
چھُ رحمان بھگوان چھُ بھگوان رحمان
دُپۍ ہِنز نہٕ کُنہٕ راے کرشنا!
یہٕ مورلی چھ بے نیاے کرشنا!
چھُ یکسان بے نیاے
کرشنا کرشنا

حِفاظت پشن ہِنز چھ وُتھ مُرسلَن ہِنز
گہے موسیٰ ہِنز گہے عیسیٰ ہِنز
گُپالَن زٕ بہٕ تھٕز بیاے کرشنا!
یہٕ مورلی دِچ جاے کرشنا!
زٕ بہٕ نش یم سٕنٛمتھ آے
کرشنا کرشنا

नये लय छे' यकसान कुनो हेंन्द्य मुसलमान
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान।
दुई हुंज़ न काँह राय कृष्णा!
यि मुरली छे' बे न्याय कृष्णा।
छु यकसान बे न्याय कृष्णा कृष्णा!

नोट:- १ दुई - वैर २ बेन्याय - न्याय रोस

हिफ़ाज़त पशन हुंज़ छे' वथ मोरसलन हुंज़
गहे मूसहन हुंज़ गहे ईसहन हुंज़
गुपाला च़े' थंज़ जाय कृष्णा!
च़े' निश संमिथ यिम आय, कृष्णा कृष्णा।

नोट :- पुश —हयवान, २ मारसल—दरजस मंज़
प'गमबरस खसिथ

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्।

ژِچھکھ تھُنِ ژِچھکھ تھُنِ ژِچھکھ ماچھ ہیو تھُنِ
یہ تھُنِ سوٗرگہ کمی اٗژ نقش اتھ چھ بنِ بنِ
چھُ کیوپڈ تہٕ سِرساے کرشنا!
یہِ موٗرلی چھ سِراے کرشنا!
حُسینٛن ژِ دیراے
کرشنا کرشنا

کرشن جی ژٕ چھے جے گُنے شہ، گُنے پے
گُنِ نے، گُنِ لے یتھی وِہ یتھ ہان دے
یمے گوٗن ژٕ نِش دٕراے کرشنا
یہ موٗرلی! ژٕ نِش زٕراے کرشنا
ژٕ جے جے! ژٕ لوٗگ آے
کرشنا کرشنا

۳۲- قضا ہوں جو کرتی ہے سب کو فنا نئی زندگی کی ہوں میں ابتدا

मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥



चु छुख थंन्य, चु छुख थंन्य, चु छुख मांछ ह्यु व थंन्य
यि थंन्य सुरगु कंम्य म्रंन्य, नकुश प्रथ छि बंन्य बंन्य,
छु वयूपिड़ ति सिरसाय कृष्णा।
यि मुरली छि ससराय कृष्णा!
हसोनन चु दुबराय, कृष्णा कृष्णा!

कृष्ण जी चें छुय जय, कुनुय शह कुनुय पय,
कुनी नय, कुनी लय, यिथी विहुच यछ़ान दय,
यिमव गुन चें निश द्राय कृष्णा!
यि मुरली! चे पंज जाय कृष्णा!
चें जय जय, चें लुंग प्राय कृष्णा कृष्णा!

घृतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् । जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्॥

कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा । बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।

मृत्युः सर्वहरश्चाहम् ...



گُلَن ہُندترنُم ، شہرن ہُند تکلُّم

چھ ہو رلی موٚدر میوٚٹھ گفتار گفتار

وزُن شبنمک ، جلترنگ تارکن ہُند

یہ ہو رلی سراپا چھ سیتار سیتار

دلچ پوشونی ہیچ زندہ آواز

یمن منز چھ پوشیدہ اسرار اسرار

۳۷ یمی برشتوں ہیں ہوں واسد لوی امشیر قبیلے ہیں پاندو کے ارجن امیر



गुलन हुंद तरंनुम थरचन हुंद तक्कलुम,
छै मुरली मुदुर म्यूठ गुफ़्तार गुफ़्तार,

वजु़न शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,
यि मुरली सरापा छै सेतार सेतार ।

दिलुच पोशु वन्य लय मनुच जिन्दु आवाज़
यिमन मंज़ु छि पूशीदु असरार असरार ।

ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याज़ि चि अंदेश करिथ चोथ,
भगवान् ! यहुंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत।
ज़ुव मंगत, जिगर मंगतु, च रुह मंगत दिलो जान,
मौसूम ! लगय क्याज़ि असी चूरि मक्खन रयोथ॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥



بالہٕ کرشنن یام دِژ نم آگہی

یادٕ گو ہردسس ہیہ ذوقِ بندگی

بانسُرِی ہُنٛد شہہ چھُ بیہ سُمکٕ آتما

بانسُرِی ہُنٛزے چھ سازِ دِلبُری

بوزٕ وٕنی دوٚپ نے خۄدی ہُنٛد رُوپ رنگ

اَتھ خۄدی پیٹھ چھےٚ فدا لچھ بے خۄدی

وِچھ امِی موٗ لی حقیقت واش کوڈ

کوٚر امی ظاہر نہ اوتار گو نبی

یکدِلی ہنز کر وہیان سوٗرخ دسفید

فاضلا! موٗرلی پتھن رنگ قودرتی

बाँसुरी

बालकृष्णन याम विचनम आगंही[1]
पांद्[2] गव हृदयस[3] म्य ओके[3] बंद्गी ।

बांसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा
बांसुरी हुंज लय छे साजे दिलबरी ।

बोजवुन्य दो'प नय "खोदी" हुँद रूप रंग
अथ खोदी प्यठ छय फिदा लछ "बेखोदी"

वुछ अमी मोरली हकीकच वाश कोंड
कोर अमी जाहिर ज़ि अवतार गव नबी ।

यकदिली[4] मंज कर व्यपान सुरखो सफ़ेद
"फ़ाजिला" मोरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, हास 2. दिलस, 3. शोक
4. हिकर



بے خبر پاٹھی کرشنہ لالن گورنس
مرتبس منز ہیر ہور ہور کھورنس
اتھ اندر میانین اتھن منز اوس کیاہ
واوِ ہالین منز بہ سودرس تورنس

Unconscious mind — Conscious mind

شعورس لاشعورس منز کرشن آم
وچھم زن سریہ، لیکن رنگ سیاہ فام
سہ یا منتھ درشنگی بروٹھی چھ ترا وان
وچھان تس گوپین سیتی الیشور تام

گیانی کو جب عرفان باری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لیے ہر طرف اللہ ہی پرماتما کا

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् । यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥ भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर । द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥



वेखबर पा'ठ्य कृष्णु' लालन गोरनस,
मरतबस मंज़ हेरि ह्यो'र 'ह्यो'र खोरनस।
अथ अन्दर म्यान्यन अथन मंज़ प्रोस क्याह,
वावु हाल्यन मंज़ बं' सो'दरस तोरनस।

शऊरस लाशऊरस मंज़ कृष्ण प्राम,
वुछुम जन सिरियि लेकिन रंगु सियाह फाम।
सु यामथ दर्शनुक्य बर वंथ्य छु त्रावान,
वुछान तस गूपियन स्'त्य ईश्वर ताम।



● دِلَن گوٚ دیٖنٕ وٕ دَھرمُک آبروٗ کَم
چھُ اَوگوٗن پھانٛپھلاوان اِبنِ آدَم
ژھیکھ اَوتار سَت یوٗگ پھیرِ واپس
اَوے کِنہِ پیارِنٛج کَل آشہٕ ہُشر چھَم

۱۔ اَوگوٗن = بدصِفت ۲۔ ابنِ آدم = اِنسان ۳۔ اَوتار ہیوٗن = ییٚنہٕ زلوٗن۔

विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

صحیح وَتھ رَٹھ ! کرشن چھےٗ سیتی پانَس
سُہ میلتھ سَنزرِ کِس ذرٚس ذرٲتَس
جہانَس سورِ سَتھ یام تار لَبنٕچ
نَجاتٕچ رَز کَرِتھ لاگِس کِنارَس

संजय उवाच

संहो वथ रठ ! कृष्ण छुय सूत्य पानस
सुमीलिथ पर्ज़रकिस जरस ज़रातस।
जहांनस सोरि सथ याम तार लबनुच,
नजार्ताच रज़ करिथ लाग्यस किनारस।

दिलन गव दीनु धर्मुक आबिरू कम,
छु अवगोन फांफुलावान इब्नि आदम।
चु ह्यख अवतार सतयोग फेरि वापस,
अवय किन्य प्रारनुच कल आशिहचछम ॥

अवगोण—बदसिफत,:— काम, क्रोध, लोभ. मोह, अहंकार
याने शहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरूर

धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥ संजय उवाच एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः



یامتھ یہِ آدم دین و دھرمُک پراٹھ یہِ سمسار
گیتا چھ شاہد کرشنہٕ گوپال سَپد نمودار
تَس سپدِ بے دِینن ادھرمَن تے یچھن ستی جنگ
مِیٹر خاک سَپدن چھیکرُس ظالم تہٕ خطاکار

۲۸۔ ہوا دل کو ارجن کے رنج و ملال، کہا رحم و رقت سے ہو کر نڈھال

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥

گیتا

کرشن جی ارجنس اسرار باوان
تمن ہند آنہ گیتا گاشراوان
سلوک نابد تہ الہامی شبد قند
پرن والس چھ امرت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्ज़ुनस असरार बावान,
तिम्न हुंदु आंनु गीता गांशरावान ।
श्लोक नाबद तु इलहामी शब्द क़ंद,
परन वांलिस छि अमृत दामु चावान ॥

यामत यि आदम धर्मुक दीनुक प्राटि यि संसार,
गीता छि शाहिद, कृष्ण गूपाल सपदि नमूदार ।
तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,
मेंच खाक सपदन छेकरस बेदीन तु खताकार ।

न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥



یام دھرتی پیٹھ سَئُد مُدی یاینہٕ عام
ژ کرِہ سندی پاٹھی ٹشہٕ نہٕ پگی کورو تمام
سَت نمودار گو اَسَت کوفور گو
کورسِری کرِشنَن صحی سمییک نظام

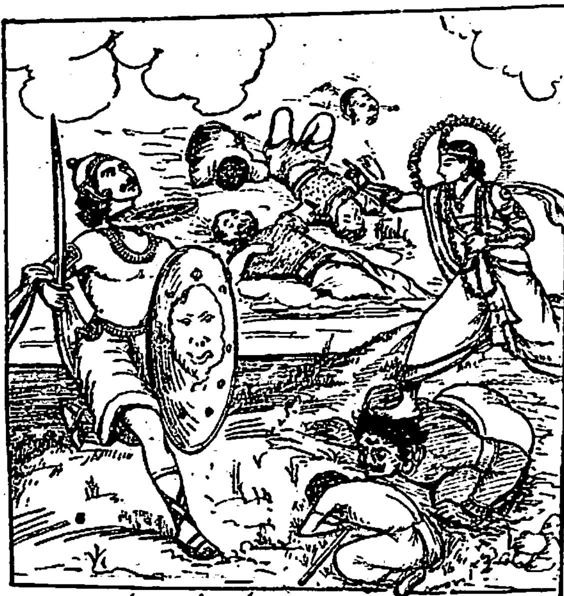


याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु पाम,
चकि हिद्य पांठ्य नचनि लेग्य कोरव तमाम।
सत नमूदार गव असथ काफूर गव,
कोर श्रीकृष्णन सेही समयुक निज़ाम ॥



چھُ بھگوَن ناسہِ تراسَن بیخ گالان ۔ دَغابازَن چھُ مَوتُک پیالہٕ چاوان
گٹَن منٛز پھالُٹوان جیوَن اَدھرمَن
سُہ دین دار: حق پرستَن تارٕ تاران

छु भगवान नासुंत्रासन बेख़ गालान ।
दग़ाबाज़न छु मोतुक प्यालुं चावान ॥
घटन मन्ज़ फोटुवान ज़ीवन अधरमन ।
सु दीन्दार: हक़परसतन तारुं तारान ॥



سِتمگارو سِتم کوٗر پانٕی پانَس
مہابھارت پھِرُن روٗد پیٚتھ زمانَس
تُلِو پزرٕچ عَلَم پوٗز روز قایِم
سَبق دِیُت کرٛشنہٕ اوتارَن جہانَس

सितम गारव सितम कौर पान्य पनस ।
महाभारत फ़िरुन रूद प्रथ ज़मानस ॥
तुलिव पज़रुच्य अलम, पो'ज़ रोज़ि क़ाइम
सबख द्युत कृष्ण अवतारन जहानस ॥

کرشن کہانی

اُگرسین اور دیوک دو بھائی تھے۔ اُگرسین متھرا کے راجہ تھے۔ دیوکی ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناطے دیوکی کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوکی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شورسین کے بیٹے واسدیو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوکی کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اُس نے دیوکی کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہوگا۔ جب کنس نے ایسا سُنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سُنا۔ اچانک پھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غُصّہ آیا اور قصد کیا کہ دیوکی کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے پہلے ہی اُس کی ماں دیوکی کو موت کے گھاٹ اُتار دوں اس کا بیٹا اُس کے بطن میں مر جائے۔ وقت آنے پر کنس، دیوکی کے بال پکڑ کر اس کو مارنے کے لئے تلوار

پہلا ادھیائے۔ دھرت راشٹر نے کہا:-

اے کروکھیت کی دھرم بھومی یہ جب جمع ہوئے ملے پانڈووں سے میرے لال سب

कृष्ण कहानी

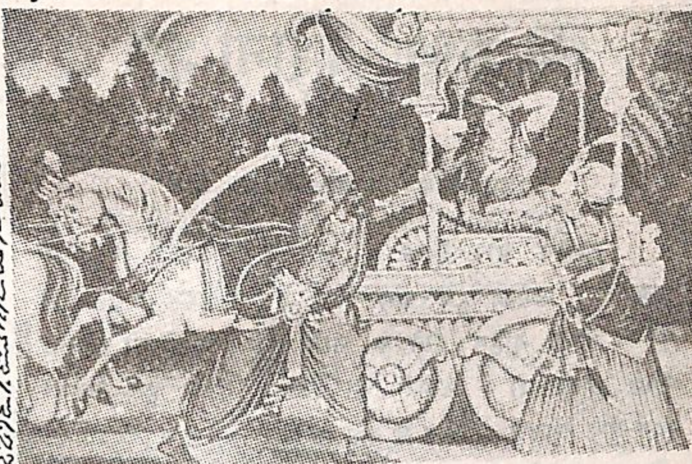
लेखक

मानस-किंकर कोशलकिशोर दास

उग्रसेन और देवक दो भाई थे। उग्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहाँ से होगा। ऐसा सोच कर

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।



کرشن مہاراج کی ماتا جی کو
بھائی کنس قتل کرنے لگا۔

تاکہ اس کا بیٹا اس کے بطن میں ہی مر جائے۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اس کو مارنے کے لیئے تلوار میاں سے نکالی۔ جیسے ہی وہ اسے مارنے لگا تو کنس نے اس کا ہاتھ پکڑا اور پرارتھنا کی کہ دیوکی عورت ہے۔ صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور شادی شدہ ہے۔ اس لئے آپ اس کو نہ ماریں۔ اس کے جو بیٹے ہوں گے ہم انہیں آپ کے حوالے کریں گے۔

कंस ने देवकी के केश पकड़ कर उसको मारने के लिए तलवार म्यान से निकाली। जैसे ही मारने को तैयार हुआ, वसुदेव ने कंस का हाथ पकड़ कर कंस से प्रार्थना की कि यह स्त्री है, अबला है, आपकी बहिन है, फिर नवविवाहिता है अतः आप इसको न मारें। इसके जो पुत्र होंगे उन्हें हम आपको सौंप देंगे। जब देवकी के



कंस बड़ा पापी था। उसकी दुष्टताकी सीमा नहीं थी। वह भोजवंशका कलङ्क ही था। आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے اُن سے نند جی کے گھر گوکل پہنچانے کے لئے کہا۔ وہاں اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسدیو کے ہاتھوں سے ہتھکڑیاں کھُل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھُل گئے اور سب پہرہ داروں پر گہری نیند غالب آ گئی۔ واسدیو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



को नींद आगई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहां पहुंचा दो और वहां उनके यहां कन्या उत्पन्न हुई है उसको यहां ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियां खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन- फैलाकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया

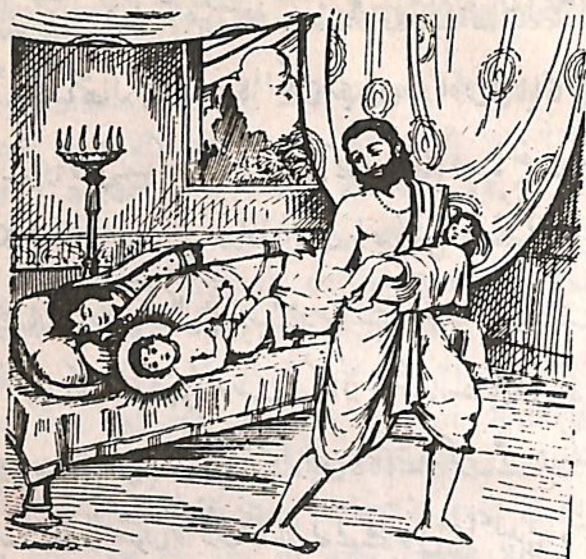


واسدیو جی نے کرشن جی مہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پر پہنچ گیا۔ اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی پانی چڑھ گیا تھا اور دریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا پھن پھیلا کر بھگوان کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقعہ فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر چوم لیئے اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسدیو جی کو پار جانے دیا۔

واسدیو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اُس وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسدیو جی نے کافی راز داری کے ساتھ کرشن جی کو ماتا جسودا جی کے پاس لٹا دیا اور کنیا کو اٹھالیا اور متھرا آکر دیوکی جی کو دے دی۔ جیل خانے میں پہلے ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا رونا سنکر تمام پہرے دار جاگ اٹھے۔ خبر پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔

مقدس گرو صاحب احترام جہاں کے دو مضمون میں عالی مقام

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥८॥
अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥



तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूप से अपना पैर निकाल कर स्पर्श कराया। यमुना जी चरण स्पर्श कर प्रसन्न हो गई और उन्हें मार्ग देदिया। वसुदेव जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे थे। अवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के पास कृष्ण जी को लिटा दिया। कन्या को उठा लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया। कारागार में पहले की भाँति ताले पड़ गये। कन्या का रुदन सुनकर सब पहरेदार जाग गये। खबर पाते ही कंस वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

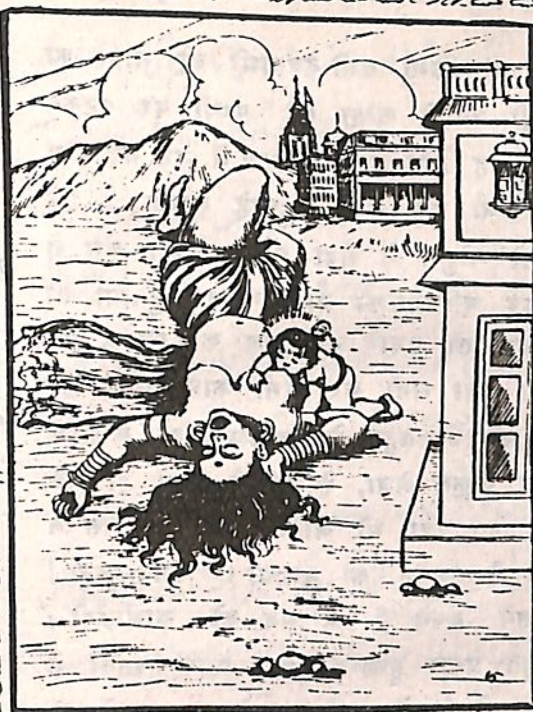
مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی مایا کا وچار آتے ہی جونہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اُٹھایا وہ ہاتھوں میں سے نکل کر فضا میں اُڑ گئی اور بولی، ارے راجہ کنس! تو مجھے کیا مار رہا تجھے مارنے والا تو گوکل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے بائیں ہاتھ کا کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے بہت سے راکھشوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوکل بھیجا، لیکن وہ خود ہی موت کا شکار ہو گئے۔ جو بھی جاتا تھا اُس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس نے پوتنا کو بلایا۔ اُس نے کہا کہ گوکل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں اُن سب کو کھا جاؤں گی۔ یہ سُن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں زہر بھر کر گوکل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر نند بھون میں آگئی اور ایک بہت سندر گوپی کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا۔ جسودا جی گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو بھگوان کے منہ میں ڈالا۔ تب پربھو نے دودھ کے ساتھ اس کے

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली अरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है। कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं। तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का ग्रास बन गए। जो भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया। उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मैं सब को खाजाऊँगी। इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ। पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई। वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं लाला की बधाई लेकर आई हूं तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया। यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुँह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः । सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् । पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१०॥

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः । भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥



پرانوں کو بھی پی لیا
اس طرح شکٹاسُر
بکاسُر اور نرکاسُر
وغیرہ بے شمار
راکھشوں کا
خاتمہ کر دیا۔
بھگوان کرشن
پہلے ہی کنس
کو بھی مار سکتے
تھے، لیکن اِن
راکھشوں کو بھی

بھگوان کرشن پُوتنا کے پران چُوس رہے ہیں

مارتا تھا، اس لئے کہ کنس اُنہیں وہاں بھیجتا تھا اور پربھُو جی اُنہیں آسانی اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیلا میں بھی سیاست کارفرما تھی، کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ماکھن عاریتاً بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے

جنگ کی شورش



लिया। इस प्रकार शकटासुर, बकासुर, नरकासुर इत्यादि अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान कंस को भी पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी मारना था अतः कंस उन्हें वहाँ भेजता और प्रभु खेल २ में उन्हें मार देते थे। भगवान की माखन लीला में राजनीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन ऋण रूप में कंस को भेजा जाता था। भगवान ने

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥
पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः। पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥

سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہئے۔ نیز گوپیوں کا اُن پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی ان کے گھر نہیں جاتے تھے وہ رو رو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی مٹکی توڑ دی۔ جسودا جی نے اُسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو ٹیڑھا کر دیا۔ یمل ارجن کا اُدھار (خلاصی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب نارد جی نے آکر کہا کہ آپ بھگوان کرشن اور اُن کے بڑے بھائی کو دھنش یگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکل کو جمنا میں بہا دینگے اکرور جی نے سب ماجرا نند جی کو سنایا۔ ماتا جسودا نے کرشن سے کہا کہ آج دور کھیلنے مت جانا، لیکن پربھو نے سب دوستوں کو ساتھ لیکر جمنا کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی تو انہوں نے اسے جمنا میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اُس میں کود پڑے۔ وہاں کالیا ناگ کو قابو میں لا کر اُس کے پھن پر ناچنے لگے اور اسی پر

۱۶- یہی ہیت بدھشٹر وہ کنتی کا لال وجے پر دکھاتا تھا اپنا کمال

बल मिलता है वहाँ नहीं जाना चाहिए। दूसरे गोपियों का उन पर बहुत स्नेह था। जिस दिन कृष्ण जी उन के घर नहीं जाते तो उस दिन वे रो-रो कर पुकारती थी और आने पर माखन खिलाती। भगवान प्रत्येक कार्य लीला द्वारा करते थे। एक बार घर में माखन की मटकी फोड़ दी। यशोदा जी ने ऊखल से बाँध दिया भगवान ने ऊखल को तिरछा करके यमुलार्जुन का उद्धार किया। जब कंस को बहुत दिन हो गये तब नारद जी ने आकर कहा कि आप दोनों बालकों को धनुष यज्ञ के बहाने बुलाओ और तीन करोड़ कमल के पुष्प लाने को कहो। कंस ने अक्रूर को दोनों बालकों को लेने के लिए भेजा और आज्ञा दी कि यदि इतने पुष्प नहीं भिजवाये तो सारे गोकुल को यमुना जी में बहा देंगे। अक्रूर जी ने सब समाचार नन्द जी को सुनाया। माता यशोदा ने कृष्ण से कहा आज दूर खेलने मत जाना। लेकिन प्रभु ने सब सखाओं को साथ लेकर यमुना किनारे गेंद का खेल शुरू कर दिया। जब भगवान के पास गेंद आई तो उन्होंने यमुना में फेंक दी और फिर स्वयं भी उसमें कूद पड़े। वहां कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥

नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥ काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।



تین کروڑ کنول کے پھول منگا لیے۔ اکرور جی جب بلرام اور کرشن کو لے جانے لگے تو تمام برج اُن کی جدائی میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی لوٹ آئیں گے۔

متھرا پہنچکر کولیا پیڑ نامی ہاتھی کو نجات دلائی۔ کشتی کھیلنے کے دوران بے شمار پہلوانوں کو پچھاڑا۔ اپنی ماتا دیوکی جی کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے مکتی بخشی۔ واسدیو اور دیوکی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اُگرسین کو قید سے نکال کر تخت شاہی پر بٹھایا۔ جراسندھ اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب اٹھارہویں بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دوارکا چلے گئے اور رات بھر میں تمام لوگوں کو دوارکا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् । नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः । प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते । सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥

संजय उवाच

वहां कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया और उसी पर तीन करोड़ कमल के पुष्प मंगवाये। अक्रूर जी बलराम, कृष्ण को ले जाने लगे, तो समस्त ब्रज विरह में रो रहा था तब भगवान ने उनको समझाया कि हम जल्दी आयेंगे। मथुरा पहुंच कुवलयापीड़ हाथी का उद्धार किया। मल्ल युद्ध में अनेक मल्लों को धराशायी किया। अपनी माता देवकी का बदला लेने के लिए ऊपर बैठे कंस को केश पकड़ कर मार कर उसका उद्धार किया। वसुदेव और देवकी को मुक्त किया। कंस के पिता राजा उग्रसेन को कारागार से निकाल कर उन्हें राज सिंहासन पर बिठाया। जरासन्ध अपने दामाद का बदला लेने के लिए सत्रह बार सेना लेकर आया। भगवान ने सबका ही संहार किया। जब अठारहवीं बार उसने युद्ध किया तो भगवान द्वारिका चले गए और रात भर में सब लोगों को द्वारिका पहुंचा दिया और स्वयं एक पहाड़ी के पीछे से निकल कर कूद पड़े। जरासन्ध ने सोचा इतने

کود پڑے۔ جراسندھ نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں ہونگے تاہم پہاڑوں کے ارد گرد آگ لگوادی۔ پھر خوش دلی سے بسر اوقات کرنے لگے۔

ادھر بھوماسُر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کر کے انہیں حراست میں رکھا ہوا تھا۔ انہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان نے بھوماسُر کو قتل کر کے مکتی دلائی۔ پھر ان کے پرارتھنا کرنے پر پتنی روپ میں تسلیم کیا۔

کوروؤں پانڈوؤں کی آپس میں دشمنی تھی۔ پانڈو بھگوان کرشن کے معتقد تھے۔ کوروؤں نے جوئے کی چال چل کر پانڈوؤں کو ہرا دیا، اور سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔ لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دُشاسن کھینچتے کھینچتے ہار گیا۔ ان کو جنگل بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی زہر دیا۔ لیکن پربھو سب طرح سے ان کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت کے جنگ میں ارجن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارجن کو موہ آیا تو اسے گیتا کا اپدیش دیا۔ جراسن کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر

۲۲۔ میں دیکھوں ذرا وہ جوان کون ہیں جری کون ہیں پہلوان کون ہیں

ऊँचे से बचे नहीं होगे और फिर पहाड़ी के चारों ओर आग लगवा दी, फिर प्रसन्न मन से रहने लगा। उधर भौमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भौमासुर का वध करके उन्हें मुक्त किया। फिर उनके प्रार्थना करने पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया। कौरव और पांडवों की आपस में शत्रुता थी। पांडव भगवान कृष्ण के भक्त थे। कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर इनको हरा दिया। तथा सब कुछ दांव पर लगवा दिया। भरी सभा में द्रौपदी को नग्न करना चाहा लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बढ़ाया कि स्वयं दु:शासन खींचते-२ हार गया। बन में भेज दिया, कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया। किन्तु प्रभु सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने। युद्ध में जब अर्जुन का मोह होगया तब उसे गीता का उपदेश दिया। जरासन्ध को भीम के द्वारा मरवा दिया। अन्त में

उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥ तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्

अन्त में विजय पांडवों की हुई क्योंकि वे धर्म की लड़ाई लड़ रहे थे। हमेशा धर्म की विजय होती है। पांडवों को राज्य दिला कर प्रभु द्वारिका आगये। भगवान कृष्ण की लीला का वर्णन कहां तक किया जाए। यह लेखनी विषय नहीं है विस्तार से वर्णन श्री भागवत में है।

मानस-किंकर कोशलकिशोर दास

فتح پانڈوؤں ہوئی کیونکہ وہ دھرم کی لڑائی لڑ رہے تھے۔
فتح ہمیشہ دھرم کی ہوا کرتی ہے۔ پانڈوؤں کو راج دلاکر
پربھو دوارکا گئے۔

مانس کنکر کوشل کشور داس

۲۵۔ درون اور بھیشم ڈٹے تھے وہاں جہے تھے وہیں راجگان جہاں۔
کہا دیکھ ارجن کھڑے صف بہ صف۔ لڑائی کی خاطر کرو سر بکف
۲۶۔ تب ارجن نے دیکھا کھڑے ہیں تمام۔ چچے۔ دادے۔ استاد ذی احترام
کہیں بیٹے پوتے کہیں یار ہیں۔ برادر ہیں۔ ماموں ہیں غمخوار ہیں
۲۷۔ خسر ہے کوئی کوئی دلبند ہے۔ کہ اک سے لگا اک پیوند ہے۔
جگر سے جگر کی لڑائی ہے آج۔ کہ لڑنے کو بھائی سے بھائی ہے آج۔

रिषीदविदमब्रवीत् । भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्

ہرے کرشنا !

کرشنہ ہیتو ! ہیتو ہیتو ! اسیٚ کلین پوشہٕ زار کرٕ !
بانسرۍ ساز وُلتو دِتو
دُدوَنن شالمار کرٕ
باغِ نشاطِ گُل پھولن - گوبیٚن دِل تہٕ شل برن
کرشنہ ! دبانہٕ ازِ مرر
شبنمس موختہٕ ہار کرٕ
چانہٕ گیٚشیامہٕ ژھایہ نش صُبح ژگین تہٕ شرمیوو
سرِیہٕ موکھس نبرِ گژھ
حارتن گرد گار کرٕ
باغِ نسیمہٕ عطر ژھٹھ - آیہ ہوایہ ورکران
پوشہٕ پدین ژیہ گتھ کری
توتہٕ ہمبس اہار کرٕ

پیارِ وِنِتھ یمبرزلن ، چانہٕ دَیایہ کُن نظر !
کرشُنہٕ دیالِہ یوٚدوٕ یِکھ
سوٗنتہٕ بلن بیمار کر

ییمی نہٕ کُرُ دِلبری گُلن ۔ ییٚس نہٕ کُرُ دِلبری گُلو !
دَرشنکی بَرہٕ مژرہٕ تمن
پریمہٕ ہتی دِل تیار کر

اَز تہٕ گنگایہٕ بُھجی بنہٕ ژھن ۔ چانہٕ ووہ میدِ یارِ گری
کُل مِہ رُمِس رُمِس گَنن
کیاہ یِمے رُم ہیہ تار کر

تارِ تسکارِ سوٗل بہٕ سوٗل ۔ ہانزِ کھیلِس نہٕ گرُندیون
ووٚنی اگر لانکہٕ بیٹھِ ترکھ
ہیوٗن دِل شرمسار کر

چانہٕ خیالِہ کِنی وَنم ۔ ساپہٕ بُدی دِل پسند سوٗخن
فاضلَن تارِ تہٕ غزل
اَز یِنُن اِشتہار کر

हरे कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर
बांसुरी शाह दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर

बागि निशा'त गुल फौलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन
मेठि, दहान' कर सौखन, शब्रममस म्वख्त'हार कर

चानि ग्येशामि छायि तल सुबहि निगीन ति शामि प्यव
सियि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर

वागि नसीम' अ'तरि छठ, आयि बेबायि वर करान
पोशि पद्यन च्य गथ करिय, तोति हम्यस अमार कर

प्यारवन्यन य'म्बर जलन, चानि पोत छाई कुन नजर
कृष्णा' दयाल ' यो'द न यिख, सोन्त' बलन ब्यमार कर

यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव
दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस वागुजार कर

अज ति गंगायि ब'ठ्य ब्रछन चानि' वो'मेजि तारिक'य
कल में रुमस रुमस गनन, क्याह यिमय रुम में तार कर

तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' ख्यलिस न ग्रंद यिवन
वोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर

चानि खयाल किन्य वनिम, सासबद्य शार दिलपसन्द
फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इश्तिहार कर



کرشنہٕ اچھوٗ کتھم رنگ تہٕ بے رنگ پان گوم
بے رنگی منز چانِ پرٛیمک رنگ سنیوم
پرٛیمہ رنگ پرٛاوِتھ کُنے رنگ نظر آم
اَتھی رنگس منز سِریہ پرٛاگاش دِل بنیوم

Krishn *Leela*

کرشن لیلا

कृष्ण लीला

از:-
ڈاکٹر نظام الدین۔ پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج سرینگر

کشمیر کے رسکھان

فاضل کاشمیری نے "بالک اوستھا" اور "کرشن لیلا" نامی کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سور داس، رسکھان، پرمانند، نروتم داس، رتنا کر، سبھی ہندوستانی بھارتی کی روایت کو قائم رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یکجہتی کو بڑھاوا دینے میں ہم انہیں امیر خسرو، نظیر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیکل اتساہی

اور نفیر بنارسی وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے ستگورو سری بابا گورونانک کی بانی کا ترجمہ کر کے ایک عظیم کارنامہ انجام دیا ہے۔ جس کی سراہنا سکھ قوم نے کی ہے۔

فاضل کاشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیّل کی ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُر خلوص ماحول کے تخلیقی کام میں جٹے ہوئے ہیں۔ اُن کے اشعار میں بانسری کے میٹھے سُر تخیّلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی اس سُر کو سنتا ہے "جے جے ہری" پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اُس میں ہندو مسلمان کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کرشن جی کو گنگا کا ایسا پاون جل (لوتر پانی) تصوّر کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے میل کو دھو ڈالتا ہے۔ کرشن گو پوشہ وُن گنگا یہ ہند جل
چھلان ہیند ہن مسلمانن دُلک مل

فاضل صاحب کرشن کی بانسری پر مورت ہیں، کیونکہ اس کا سُر ہم آتما ہے۔ جلوۂ روشنی حیات ہے اور سازِ دلبری ہے۔

مرلی دھر کرشن اس میں پھونک مار کر گیان وعرفان کے
ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے جس سے اطراف عالم میں
کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار البشور
اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و
بھگوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضل صاحب کرشن کے رنگ و روپ پر موہت ہیں
انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پھولوں میں رنگ و بُو کرشن کی
بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین
گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضل صاحب کی یہ کتاب "کرشن لیلا" بھارتیہ کرشن کاویہ
میں ایک گرانقدر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد
رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

(signature)

(DR. NIZAM-UD-DIN)
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

ترجمہ:- پرتھوی ناتھ کول "سائل" کشمیری

بھگوان کرشن نے

گیتا جی میں ارشاد فرمایا ہے :-

خاک، پانی، آگ، ہوا، خلاء، من، ذہانت اور خودی۔ اِن آٹھ متضاد اقسام سے میری پرکرتی بنی ہے۔ یہ میری آدتیہ اوستھا ہے۔ اوستھا کو بھی سمجھنے کی کوشش کرو۔ اِس کے علاوہ میری اُتّم اوستھا سویم ہی میں ہے جس پر ساری کائنات کا دارومدار ہے۔ تم اِس بات کو سمجھ لو، کہ تمام جاندار اور بے جان اِنہیں دو سے بنے ہیں۔ مَیں اِس بدلتے سنسار کی ابتداء ہوں اور اختتام بھی۔

دیھشناپن نہینے کے درمیان جوکہ آٹھویں کرشن پکھش کے
کالے پندرہ واڑے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں
موت کے کالے سائے منڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں
مُتبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچّے، کرشن نے جنم لیا۔
گیتاجی کی بھاشا کی روشنی میں کرشن کے معنی "کالے" کے ہیں
جس کی مناسبت کرشن پکھش کے تاریک پندرہ واڑے کے ساتھ
ہے۔ یہ وہ سمے تھا جب جگت کے تمام رہنے والے لوگوں میں
ناسمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا ... اندھکار کے اس
دور میں کرشن جیسے روشنضمیر رہنما کے وجود کی اشد ضرورت تھی
جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کرتوت والے
منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتاجی
کے درس سے برھمانڈ کی اصلیت اور مایا کی ماہیت سے واقف کیا
بھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود
جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مُرلی منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہمارے

کرشن کے مُرلی منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیارے



بھگوان کرشن جی مُرلی بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سُننے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔ کرشن جی سیکیولرازم کے اوّلین پرچارک تھے۔ اُنہوں نے لوگوں کو بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زہریلے سانپوں اور

رہزنوں کو بھی قابو کر لیا اور اُن کا سُدھار کیا۔



کرشن جی دھرم کے محافظ، سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔ انھوں نے انسان کو دُنیائی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور حق پرست تھے ۔ وہ پانڈوؤں کے دوست اور پُشت پناہ تھے۔ اُنھوں نے ظُلم و تشدّد، جعلسازی اور دغابازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے اُکھاڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ "دھرم یگ" کے تنظیمی ادارہ نے انہیں "کشمیر کا رسکھان" کا خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی کا بھرپور اظہار اپنے شبدوں میں ہمارے سامنے پیش کیا ہے۔ انہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی کے سُندر مرقعے سجائے ہیں۔ اُن کی کتاب "کرشن لیلا" کی لیلاؤں میں ترنم، تاثیر اور گداز ہے۔ اُن کے اِس عظیم کام سے سوشلزم اور قومی یکتا کے میدان میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دُعا ہے کہ یشودھا کا بالک کرشن جو دائیں ہاتھ میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا گلے میں زرق برق جواہرات کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو ابدی مسرّت عطا کرے!

30-8-83

(ڈاکٹر جگت موہنی)

کشمیری علم و ادب اور قومی یکتا کے کاز کو بڑھاوا دینے کے سلسلہ میں فاضل کاشمیری نے شری جب جی صاحب اور سلوک مہلہ نواں اور ستھہ رنگ کے بعد اس بار اپنی کرشن لیلائیوں کا یہ حسین گلدستہ "بالک او ستھا" عوام کے بہبود کے لئے منظرِ عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے، جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت میں دور رس نتائج برآمد ہونگے۔

علی محمد لنگر

سرینگر کشمیر
۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء

PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalnagar, P. O. Natipur
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلاؤں سے سب کو یکساں طور پر اپنی طرف کشش کی ہے۔ اُن کا بالک سُروپ سُور داس اور رس خان جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گیا ہے۔ ان دو شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق واتسلیہ رس یعنی شفقتِ مادری کا جذبہ) سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب کو امر بنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کاشمیری ایک ایسی شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں اُن تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے ہیں۔ فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذاہب کی بُنیادی وحدت کو سمجھ کر

اپنی سُریلی زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پرچار کرتے ہیں وہ
پرم ہنس رام کرشن مہاراج کے سرو دھرم سمنوئے (Harmony of religions)
کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصوّر کرتے ہیں۔ وہ گیتاجی،
مقدّس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنتھ صاحب میں ایک ہی
پیغام کی مختلف صُورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو میں نے دھارمک محفلوں اپنی کرشن لیلائیں
سُناتے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے
ایک پُرکیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست،
روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجّہ
ہے جسے پڑھنے والے اور سُننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی
سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اِس بار فاضل صاحب نے بالک او سمتھا کی کتابت و تزئین
اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصّہ ہے۔

چمن لال سپرو
25.1.84

25-1-1984

Fazil Kashmiri is, I have understood, unparalled devotee of Lord Krishna. Although he is born muslim, but he is no longer now muslim in a strict theological sense, or Pandit. He is actually established in that state of divine devotion of Lord that has risen in that state where he has gone above limitation of caste creed and colour. He is just devotee of Lord Krishna. I hope this

अध्याय १६

श्रीभगवानुवाच अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥
संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।

book 'Krishen Leela' will illumine the whole world.

I hope that each & every human being should and must own this valuable book, so that they also rise to that state of Divine oneness where limitation of caste and creed are not recognized.

6-11-83. Lakshman joo
Guptaganga

(شیوآچاریہ سوامی لکشمن جو مہاراج ۔ گپت گنگا سرینگر)

शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च । अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ॥

فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے بانیوں اور پرستاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں جس کے آئینہ میں اُن کی "انوارِ محمدیؐ"، "شری جپ جی صاحبؐ" اور "کرشن لیلا" جیسی گرانقدر تصانیف پیش کی جا سکتی ہیں۔

زیرِ نظر اُن کی تصنیف "کرشن لیلا" اُن کی کرشن بھگتی کی تصویر ہے۔ فاضل مصنّف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج پر سُندر نظمیں لکھی ہیں۔ انہیں سُنکر اور پڑھ کر سامعین اور قارئین رُوحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں، خالصہ درباروں اور دھاالسوؤں میں حاضرین اُنہیں اپنا کلام سُنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور اُن کی قدر دانی کرتے ہیں۔

فاضل صاحب کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

۲۶ فروری ۱۹۸۴ء

(میلارام نجیون — گوگجہ باغ)

कृष्ण–लीला

Krishna Leela

This Beautiful Book

of the Personality of

Kṛishṇa

provides the key to how humanity can become united in peace, prosperity and friendship around a common cause.

Printed at Hind Samachar Printing Press,
Pacca Bagh, Jalandhar City.